ग्रामीण पाठकों के लिए

प्रतिभा

संक्षिप्तीकरण
हरेकृष्ण महताब

अनुवाद
मंजु शर्मा महापात्र

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-3165-5

पहला संस्करण : 2000 *(शक 1922)*

PRATIBHA *(Hindi)*

रु. 12.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

1

सनातन की लड़की के साथ जमींदार रामहरि के लड़के का ब्याह जिस दिन तय हुआ, बस उसी दिन से सनातन के सिर पर बोझ बढ़ गया। हालांकि उन्होंने बड़ी खुशी से खुद ही दूसरों की मदद से इस रिश्ते को तय करवाया था। एक गरीब घर की लड़की बड़े घर में जाएगी। होनेवाला दामाद कटक कॉलेज से बी.ए. पास कर वकालत की पढ़ाई कर रहा है। भाग्य से ही ऐसे रिश्ते बनते हैं—ये सब बातें सोचकर वे बहुत खुश थे। वे मन ही मन अंदाज़ा लगा रहे थे कि अब तो उन्हें अपने समधी की जमींदारी में जरूर कोई अच्छी नौकरी मिल जाएगी, पर उन्हें एक चिंता खाए जा रही थी। बरातियों के स्वागत और बेटी के गहनों का खर्च उनके सामने मुँह उठाए खड़ा था। इसके लिए लगभग दो सौ रुपए चाहिए, पर वे आएंगे कहां से ? उन्होंने इस बारे में अपनी पत्नी से बात की।

जमींदार रामहरि खुशी-खुशी इस विवाह के लिए राजी हो गए थे। उन्हें यह विश्वास हो गया था कि जो तीन शर्तें उन्होंने अपने बेटे के विवाह के लिए रखी थीं उन पर सनातन की बेटी पूरी खरी उतरती है। उनकी पहली शर्त थी, लड़की बहुत सुंदर होनी चाहिए। उनकी दूसरी शर्त थी कि लड़की गरीब घर की होनी चाहिए। (उनकी अपनी पत्नी एक गरीब घर से आई थी) उनका दृढ़-विश्वास था, साथ ही अपने जीवन के अनुभवों से उन्होंने जाना था कि लड़की जितने गरीब घर से आएगी उतनी

ही दबकर रहेगी। उनकी तीसरी शर्त थी कि लड़के-लड़की की जन्म-कुंडली पूरी तरह से आपस में मिलनी चाहिए। इस तीसरी शर्त में कुछ गड़बड़ी थी, पर जीवन भर जमींदारों के अनेक विभागों में काम करते हुए सनातन ने जो पैंतरेबाजियां सीखी थीं, वही काम दे गईं। उन्होंने गांव के ज्योतिषी को कुछ पाठ पढ़ाकर अपनी तरफ कर लिया था, उससे बिगड़ता हुआ काम बन गया था। ब्याह का शुभ मुहूर्त भी निकल आया था। पर सनातन को बस एक ही चिंता थी कि दो सौ रुपए आएंगे कहां से ?

कुछ सोचकर ही उन्होंने अपनी यह चिंता अपनी पत्नी को बताई थी। वे जानते थे कि उसके पास इतने रुपए होंगे। जब

से वो ब्याह कर आई थी उसी दिन से, इन बीस सालों में उसने घर के खर्चों से बचा-बचाकर एक गुल्लक में जमा किए थे। जब पैसे ज्यादा हो जाते थे तो वह उन्हें रुपयों में बदलकर जमा करती रहती थी। रोज संध्या-वंदन के समय वह उस स्थान पर भी धूप-बत्ती दिखाती थी। उनकी पत्नी समझ गई थी कि उसके पति की आँख उसके जमा धन पर थी। उसने पति की सारी बात सुनकर कहा, "ये तो तुम जानो, कहीं से भी रुपयों का इंतजाम करो। मैं तो ठहरी औरत जात, मैं भला क्या करूंगी ?" इतना सुनने के बावजूद भी सनातन को आशा थी कि अपनी बेटी के ब्याह में, साथ ही इस ब्याह से उनका भविष्य भी संवर सकता था सो उनकी पत्नी अपनी जमा पूंजी अवश्य निकालेगी। इधर उनकी पत्नी सोच रही थी कि यदि मैं इसी तरह थोड़ी कड़ी बनी रहूंगी तो पति खुद जाकर कहीं न कहीं से पैसों का इंतजाम करेंगे ही। इसी तरह से दोनों के बीच एक खींचातानी सी चल रही थी।

2

सनातन की बेटी केवल देखने में ही सुंदर न थी बल्कि उसका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा था। उसके सौंदर्य की चर्चा सारे गांव में थी। उसका ब्याह तय होने तक उसने अपने गांव की उच्च प्राथमिक पाठशाला की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उसके अम्मा-बाबूजी उसे 'अपुछि' नाम से बुलाते थे। स्कूल के हाजिरी रजिस्टर में उसका नाम लिखा था 'अपुछि देवी'।

एक दिन गांव का एक शिक्षित युवक महेंद्र बाबू पाठशाला घूमने आया था। वह कटक के कॉलेज में पढ़ता था। वह शिक्षा विस्तार की दिशा में अपना कर्तव्य समझकर पाठशाला आया

था। उस समय 'अपुछि' तेरह साल की थी और वह पाठशाला की सर्वोच्च कक्षा में पढ़ती थी। चारों ओर घूमते हुए निरीक्षण करते समय उसकी आंख अपुछि पर पड़ी। उसने 'अपुछि' को किताब पढ़ने को कहा। वह उसके मधुर-स्वर और साफ उच्चारण को सुन मंत्रमुग्ध-सा हो गया था। लगभग तीन पन्ने पढ़े जाने तक वह उसी की ओर टकटकी लगाए था। अचानक बीच में लड़की ने सिर उठाया तो देखा वह युवक उसी को ताके जा रहा है तो वह लजा गई। वह युवक भी कुछ हड़बड़ा गया। उसने 'अपुछि' को किताब बंद करने को कहा। उसने मास्टरजी से हाजिरी रजिस्टर मंगवाकर उस लड़की का 'अपुछि देवी' नाम काट दिया और उसकी जगह 'प्रतिभा देवी' लिख दिया। उस युवक ने अपने सुधार के बारे में मास्टरजी से कहा, "देखिए मास्टरजी, नाम कोई साधारण बात नहीं है। नाम के अनुसार मनुष्य के गुण भी विकसित होते हैं।"

प्रतिभा की इस खूबी को जानकर उसके अम्मा-बाबूजी बहुत खुश हुए। उच्च प्राथमिक परीक्षा में भी उसे छात्र-वृत्ति मिली थी। पर उसे और आगे पढ़ाने के लिए उसके अम्मा-बाबूजी राजी नहीं थे। उस शिक्षित युवक, महेंद्रबाबू ने उसकी पढ़ाई का सारा खर्च स्वयं उठाने का तथा उसे कटक में पढ़ने का पूरा विश्वास प्रतिभा के घरवालों को दिलाया था। यह सुनकर प्रतिभा के बाबूजी थोड़े-थोड़े राजी हो गए थे पर उसकी अम्मा ने सिर झटककर प्रस्ताव को नकार दिया था। बोली थी, "जवान होती लड़की को कटक भेजकर कोठे की वेश्या के पास नाम लिखाना है क्या ?"

बस ऐसे ही प्रतिभा की पढ़ाई बंद हो गई और वह बंद होकर रह गई घर के एक कोने में। उसकी इस दुरावस्था को जानकर महेंद्रबाबू ने लंबी सांस ली और सोचने लगे, "ऐसे ही

न जाने कितने जंगली मोंगरे के फूल खिलकर जंगल में ही नष्ट हो जाते हैं।'' फिर भी वो पाठशाला के मास्टरजी के द्वारा उसे पढ़ने के लिए किताबें तथा मासिक पत्रिका भेजते रहे। वे सब किताबें, उसी पाठशाला में पढ़ रहा प्रतिभा का छोटा भाई, उसे घर में लाकर दे देता था। गोशाला का गोबर साफ करना, दूध निकालना, दोपहर के लिए भोजन बनाना आदि काम खत्म कर प्रतिभा को बहुत कम समय पढ़ने को मिल पाता था।

3

फिर एक बार महेंद्रबाबू गांव आते हैं। पहले की तरह ही वे पाठशाला आए। वहां मास्टरजी से उन्हें पता चला कि उनके द्वारा भेजी गई सभी किताबें तथा पत्रिकाएं प्रतिभा के छोटे भाई सिद्धेश्वर के हाथ से ठीक समय पर प्रतिभा के पास पहुंच जाती हैं। सो इस बार भी उन्होंने अपने साथ लाई हुई किताबें तथा मासिक पत्रिका सिद्धेश्वर को देते हुए कहा, ''लो इसे ले जाकर प्रतिभा को दे देना, समझे ?''

सिद्धेश्वर ने घर जाकर किताबें और पत्रिका प्रतिभा के ऊपर फेंक दी और बोला, ''ये ले, हमारे स्कूल में महेंद्रबाबू आए थे उन्होंने तेरे पढ़ने के लिए ये किताबें भेजी हैं।'' उसकी आवाज अम्मा के कान में पड़ गई थी। वो चौकन्नी हो गई थी। किताबें किसने भेजीं, यह जानकर उसका दिमाग भन्ना गया। वह गुस्से में तमतमाकर बोली, ''उसे क्या और कोई नहीं मिला, मेरी बेटी क्या इतनी सस्ती है ? अमीरजादा है तो क्या जो मन में आएगा सो कर लेगा ? आदि-आदि न जाने क्या कह-कहकर वह चिल्लाने लगी थी। जब बेटी उन्हें समझाने की कोशिश करने लगी कि वे तो बराबर इस तरह किताबें पढ़ने के लिए

भेजते हैं ये आज की कोई नई बात तो नहीं है। यह सुनकर तो उसकी अम्मा का पारा और चढ़ गया बोली, "क्या बोली, वो बराबर भेजता है ? मैं तो सोचती थी कि मेरी बेटी अच्छा पढ़ती है सो सरकार की तरफ से उसके लिए किताबें आती हैं। अच्छा तो ये महेंद्र भेजता रहा। उसने हमारे घर को क्या कोठा समझ लिया ? जाती हूं अभी उस मास्टर की खबर लेती हूं ?"

उसके बाद उसकी अम्मा ने पाठशाला जाकर मास्टरजी को गाली-गलौच शुरू कर दी। वे कह रही थीं, "अरे, तू यहां मास्टरगिरि करता है या भड़ुआगिरि ? मेरी लड़की तेरी पाठशाला में पढ़ती थी सो तू दूत का काम करता था, क्यों रे? और भी न जाने वो क्या-क्या बकती गई। कुछ समय तो मास्टरजी अवाक् हो सुनते रहे पर बाद में उन्होंने उसकी बातों का प्रतिवाद किया। पर उससे प्रतिभा की अम्मा को कोई फर्क नहीं पड़ा। हल्ले-गुल्ले की आवाजें सुन आसपास पांच-सात लोग जुट गए थे। अपुछि की अम्मा का झगड़ालूपन सभी जानते थे। सो पहले लोगों ने उसे ही समझाया कि गांव के मास्टर को इस तरह क्यों वह बीच रास्ते में डांट-डपट कर रही है, क्यों वह गांव की इज्जत को बीच सड़क पर ला रही है आदि-आदि। इस पर अपुछि की अम्मा ने विस्तार से उन्हें सारी बातें कहीं। उसने बताया कि महेंद्र ने इस मास्टर को पटा रखा है और इसी के हाथ वह मेरी बेटी के पास चीजें भिजवाता है। मास्टरजी ने भी एड़ी से चोटी तक का जोर लगाकर अपनी बात समझाने की कोशिश की। वे बोले कि महेंद्रबाबू विद्वान व्यक्ति हैं, धनी आदमी हैं, उनकी नीयत खराब नहीं है बस इनकी बेटी पढ़ाई में अच्छी है सो इसलिए उसके पढ़ने के लिए कुछ किताबें भिजवाते थे। पर अपनी बात समझा-समझाकर वो हार गए और अंत में फैसला हुआ कि गलती मास्टरजी की ही है। एक

जवान लड़की के पास परपुरुष का सामान पहुंचाना अन्याय है। जो भी हो आइन्दा ऐसा नहीं होना चाहिए। वे लोग किसी तरह अपुछि की मां को समझा-बुझाकर ले गए थे।

धीरे-धीरे यह बात सारे गांव में फैल गई थी। लोग बातें कर रहे थे कि जनार्दनबाबू के लड़के ने सनातन बाबू की लड़की के साथ कुछ चक्कर चला रखा था पर बीच में ही अपुछि की अम्मा ने उन्हें पकड़ लिया, और जैसे-तैसे करके बात को दबा दिया गया। महेंद्रबाबू ने जब यह सुना तो एक गहरी सांस ले बोले, "यही तो हमारे समाज की दशा है। जहां नारी पर इतने अत्याचार किए जाते हों वहां उसकी मुक्ति कैसे संभव है ?"

4

जिस मासिक पत्रिका और किताब के लिए इतना बवंडर मचा था, उसी मासिक पत्रिका में 'समाज में नारी का स्थान' नामक एक निबंध था। लेखक थे श्री महेंद्र प्रसाद महापात्र यानी हमारे महेंद्रबाबू। उस किताब का नाम था 'नारी'। इसमें नारी जागरण और प्रगति से संबंधित अनेक लेख थे। प्रतिभा ने देखा कि उस पत्रिका में उसकी बात भी लिखी हुई थी। उसका किस तरह नाम बदला गया, उसकी विलक्षण बुद्धि तथा उसे उच्च प्राथमिक शिक्षा के बाद और आगे पढ़ाने का प्रयत्न कैसे बेकार गया आदि बातें उसमें लिखी हुई थीं। उसमें यह भी लिखा हुआ था कि यदि समाज रुकावट न बनता तो प्रतिभा एक दिन देश की बड़ी नारी नेत्री हो सकती थी।

उस निबंध को प्रतिभा ने बार-बार पढ़ा और खुश हुई। आज तक समाज के जिन नियम-सिद्धांतों को वह स्वाभाविक

मानकर स्वीकारती आई थी, आज पहली बार उनके लिए उसके मन में अनेक प्रश्न उभर रहे थे—जब पुरुष शिक्षा प्राप्त कर सकता है तो नारी क्यों नहीं ? पुरुष स्वतंत्र हो, हर जगह आ जा सकता है तो नारी क्यों एक पिंजरे में बंद होकर अंधेरे कोने में पड़ी रहे ? आदि-आदि। एक अच्छे इंसान के कारण उसे घर बैठे कुछ-कुछ पढ़ने को मिल रहा था, पर उसी बात को लेकर बखेड़ा खड़ा करना, उसमें वेश्या तक का नाम जोड़ देना उसे बड़ा असहनीय लगा। यह बात सोचते ही उसकी आंखों में आंसू झरने लगे थे। आंसुओं के बाद उसका मन कुछ हल्का हो गया था। समाज में नारी के ऊपर किए जानेवाले अत्याचारों के बारे में अनेक बातें उसके मन में आ रही थीं। वह मन ही मन सोच रही थी कि महेंद्र बाबू ने जो लिखा है कि वह एक दिन बड़ी नारी नेत्री बन सकती थी। इसी तरह की अभिलाषाओं के पंख लगाकर वह कल्पनालोक में उड़ी जा रही थी। सोचते-सोचते अचानक उसे याद आया कि कैसे उस दिन महेंद्रबाबू टकटकी लगाकर उसी को देखे जा रहे थे। और अंत में बस एक ही भाव उसके मन में आ-जा रहा था "काश ! फिर उनसे एक बार मुलाकात होती !"

तभी अचानक मां के कर्कश स्वर से उसका सपना टूट गया। वह जोर-जोर से कह रही थी "ससुराल में यदि झाड़ू से तेरी पीठ न सेंकी गई तो मेरा नाम नहीं। सांझ होने को आई, ढोरों को दाना-पानी नहीं मिला, संध्या-आरती नहीं सजी और मेरी लाड़ली पढ़ रही है—तो पढ़ रही है—पढ़े जा रही है। अरे मैं कहती हूं इस गांव में और भी लड़कियां हैं या बस तू ही एक है रे ?...."

5

ये सच था कि अपनी इज्जत बचाने के लिए महेंद्रबाबू जल्दबाजी में कटक चले गए थे पर उनके मन को बहुत धक्का लगा था। प्रतिभा के पास कुछ किताबें भेजने को लेकर जो बवंडर मचा था उससे एक मासूम लड़की के नाम पर कितना दाग़ लगा होगा। और बेचारी वो तो शर्म से सिर भी नहीं उठा पा रही होगी ! "मैं क्या उसे किसी प्रकार मदद नहीं कर सकता ?" इसी प्रकार की विचारधाराएं उनके मन में आ जा रही थीं।

सोचते-सोचते एक दो बार उनके मन में आया कि प्रतिभा से ब्याह कर लेने पर सारा झंझट ही समाप्त हो जाएगा, पर यह विचार अपने आप दब भी गया। ब्याह तो उनके हाथ की बात नहीं है इसके लिए माता-पिता की राय लेना जरूरी है। और फिर उनका समाज भी उन्हीं के पक्ष में बोलेगा ऐसा भी तो पक्का नहीं है। तभी उनके मन में एक विचार कौंधा कि प्रतिभा के साथ संपर्क तो रखा जा सकता है। बस वे बिना देर किए तुरंत अपने गांव की ओर चल पड़े।

हमेशा की तरह वे पाठशाला देखने गए। वहां जाकर उन्होंने मास्टरजी से पाठशाला की आर्थिक अवस्था पर बातचीत की। मास्टरजी ने वहां के आर्थिक हालात के बारे में एक लंबी सी कहानी कह डाली थी। उनकी बातें सुनकर महेंद्रबाबू ने उन्हें घर आने का आमंत्रण दिया था। घर पर उन्होंने मास्टरजी से अति सहानुभूतिपूर्ण होकर पूछा था, "बोलिए मास्टरजी, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं। आखिर यह गांव मेरा भी तो है, इसके प्रति मेरा भी तो कुछ कर्तव्य बनता है।" और इसी क्रम में उन्होंने मास्टरजी से वादा किया कि हर महीने

उनके पिता से उन्हें जो पचास रुपए मिलते हैं उसमें से पांच रुपए बचाकर वे उन्हें भेजेंगे। फिर उन्होंने सुझाव दिया था कि बीच-बीच में विद्यार्थियों को कुछ पुरस्कार देना भी अच्छा होगा। उसके लिए धन कहां से आएगा का प्रश्न उठने पर उन्होंने कहा था, "मैं कुछ मदद अवश्य करूंगा।"

बस इस तरह से बराबर हर महीने पांच रुपयों के साथ कुछ किताबें और मासिक पत्रिका विद्यार्थियों को पुरस्कार में देने के लिए मास्टरजी पाने लगे थे। हर बार एक मासिक पत्रिका और एक किताब के ऊपर महेंद्रबाबू सिद्धेश्वर का नाम लिख देते थे। मास्टरजी हमेशा सोचते कि शायद महेंद्रबाबू को इस एक ही छात्र का नाम याद है अन्यथा वे जरूर अन्य छात्रों का भी नाम किताबों पर अवश्य लिखते।

महेंद्रबाबू की युक्ति पूरी तरह काम कर गई थी। इसमें कोई संदेह नहीं था क्योंकि सिद्धेश्वर नई किताब मिलने पर अपनी जीजी को दिखाता था। एक बार प्रतिभा ने चालाकी से उससे अकेले में पूछा था, "ये सब किताबें तुझे कौन देता है रे ?" सिद्धेश्वर ने बताया था कि कटक से महेंद्रबाबू भेजते हैं। और भी चार बच्चों के लिए भेजते हैं पर उसकी किताब सबसे सुंदर है। उस पर वे उसका नाम भी लिखकर भेजते हैं।

प्रतिभा को अब और कुछ भी पूछने की जरूरत न थी। उसने एक गहरी सांस लेकर किताब को अपनी छाती से लगा लिया था।

6

सनातन और उनकी पत्नी प्रतिभा के ब्याह के संबंध में बातें उससे छिपाकर नहीं करते थे। एक तो उनकी यह आदत न

थी दूसरा उनके घर में कमरों का अभाव था। अतः ब्याह से संबंधित बातें कभी-कभार उसके कानों में पड़ ही जाती थीं। इसी बीच सिद्धेश्वर से मिली एक पत्रिका में उसने महेंद्रबाबू का एक लेख पढ़ा था। उसमें हमारे देश में प्रचलित विवाह-प्रथा से नारियों को जो कष्ट भोगना पड़ता है उसके बारे में विस्तृत वर्णन था। उसमें लिखा था कि माता-पिता अपनी बेटी के सुखों के बारे में न सोचकर बल्कि अपने स्वार्थों के अनुसार ही उसका ब्याह कर देते हैं। हमेशा के लिए उसे एक जाल में फंसा देते हैं। इससे देखा गया है कि अधिकांश नारियां जीवनभर तड़प-तड़पकर जिंदगी गुजारती हैं। इस लेख को पढ़ने के बाद जब प्रतिभा को पता चला कि उसके बाबूजी अपनी गरीबी दूर करने के लिए ही उसका ब्याह करवा रहे हैं तो उसे अपने बाबूजी पर बहुत गुस्सा आया। उसे अपनी अम्मा पर भी बहुत गुस्सा आया क्योंकि वह भी उसे बोझ समझकर अपने सिर से उतार देना चाहती थी। पर वह बहुत मजबूर थी। जब उसका मन बहुत बेचैन हो जाता तो वह महेंद्रबाबू के बारे में सोचने लगती थी। वह सोचती थी कि यदि वे एक बार मिल जाते तो वह उनसे पूछती कि इन परिस्थितियों में उसे क्या करना चाहिए ? पर बाद में उसका मन मुरझा जाता, क्योंकि वह जानती थी कि उनसे मिलने की बात रात में सूरज उगने की तरह ही है।

अंत में उसके मन में यह विचार पक्का हो गया था कि चाहे जो कुछ भी हो वह इस विवाह की विरोधी है। पर उसके इस विचार ने घर में अशांति मचा दी थी। अंत में मजबूर हो उसने फैसला किया था कि चाहे उसके अम्मा-बाबूजी उसका ब्याह करा दें पर वह खुद को कभी भी विवाहिता नहीं मानेगी।

7

इधर प्रतिभा के विषय में दिन-रात सोचना, उसके ख्यालों में डूबे रहना, महेंद्रबाबू का रोज का काम हो गया था। वे कल्पना करते—वो उनके लेख पढ़ती होगी, पढ़कर क्या सोचती होगी। उनका मन होता कि प्रतिभा से अगर मुलाकात होती तो वे उस विषय पर उससे बातें करते। उसके गले की मीठी आवाज सुनते, उसे निहारते…। सोचते-सोचते वे भाव-विभोर हो उठते। कल्पनालोक से निकलकर वे कई बार सोचते—क्या इन कल्पनाओं को साकार नहीं किया जा सकता ?

वे बड़ी दुविधा में पड़ गए थे। वे जानते थे प्रतिभा ही क्यों और भी किसी लड़की से वे विवाह नहीं कर सकते हैं। यह रुकावट उनकी खुद की उत्पन्न की हुई थी। महेंद्रबाबू ने अपने कॉलेज में एक संगठन बनाया था। उसका नाम था 'वीर समाज'। उसका उद्देश्य देश में फैले कुसंस्कारों, अशिक्षा, रूढ़ियों और मूढ़मान्यताओं से लड़ना था। इस रास्ते पर चलने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी इसके सदस्य राजी थे। आवश्यकता पड़ने पर जीवनदान भी दिया जा सकता है, यह बात सभी सदस्य मानते थे। इस रास्ते पर चलने के लिए उन सबने कुछ नियम बनाए थे जैसे, पहला—पढ़-लिखकर कोई भी नौकरी नहीं करेगा, दूसरा—कोई विवाह नहीं करेगा क्योंकि इससे उन्हें फिर उन्हीं पुरानी प्रथाओं में घुसकर जीना पड़ेगा।

एक बार 'वीर समाज' की साप्ताहिक गोष्ठी में महेंद्रबाबू ने विवाह के नियम को लेकर एक नया सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने इस समाज में प्रचलित विवाह-प्रथा के विरूद्ध जो आंदोलन छेड़ा है कि 'हम विवाह नहीं करेंगे' वास्तव में वह कोई बड़ी वीरता नहीं है। वास्तव में 'हम असवर्णों से

विवाह करेंगे।' यही हमारा सिद्धांत होना चाहिए। जबरदस्त तर्क-वितर्क के बाद अंत में यह निर्णय लिया गया कि विवाह न करना ही अच्छा है पर जो बिलकुल भी विवाह न कर रह नहीं पाएंगे वे असवर्ण विवाह करेंगे और दहेज की बात तो

वे अपनी जुबान पर लाएंगे ही नहीं। यह नया नियम महेंद्रबाबू के अनुकूल ही था क्योंकि प्रतिभा के साथ उनका विवाह असवर्ण विवाह के अंतर्गत ही आता। वे खुद बनिया थे और प्रतिभा क्षत्रिय घर की लड़की थी। अब आगे उनकी क्रियापद्धति क्या होनी चाहिए वे कुछ निश्चित नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने कई प्रेम कविताएं उसी मासिक पत्रिका में छपवाईं जिसके ग्राहक उनके पिता भी थे। पर दुख की बात तो यह थी कि उनके पिता पत्रिका पढ़ना तो दूर उसे खोलते तक न थे।

बी.ए. पास करने के बाद उनके लिए दो तीन जगह से रिश्ते आए थे। महेंद्रबाबू को जब यह पता चला कि उनके पिता दहेज की मांग कर रहे हैं तो वे बहुत गुस्सा हुए। उनके पिता का कथन था कि जो उनके बेटे को विलायत भेज कर पढ़ाएगा वे उसी घर में अपने बेटे का ब्याह करेंगे। विवाह से संबंधित अनेक लेख वे लिख चुके हैं, वो जरूर उनके पिताजी की निगाहों में पड़े होंगे पर वे हैं कि अपने बेटे से उन्होंने एक बार राय तक न ली। अंत में उन्होंने निर्णय किया कि अपने पिताजी को रास्ते पर लाने का एक ही तरीका है कि वे घोषणा कर दें कि वे विवाह नहीं करेंगे। बस, इससे उनके माता-पिता बाद में आकुल-व्याकुल होकर उनसे बात करेंगे और इस तरह वे अपनी मर्जी से विवाह कर सकेंगे। उन्होंने तुरंत इसी संबंध में अपने पिता को एक चिट्ठी लिख डाली। पत्र पाकर उनके पिता जरा भी विचलित न हुए बल्कि उन्होंने सोचा कि कुछ समय के लिए इस संबंध में चर्चा न करना ही उचित होगा। पर विभिन्न जरियों से वे अपने बेटे की गतिविधियों पर नजर रखे हुए थे।

8

नवीन, जिन्होंने 'वीर समाज' की गोष्ठी में विवाह न करने के पक्ष में तर्क-वितर्क किया था, वे थे महेंद्रबाबू के सहपाठी और रामहरिबाबू के बेटे। उन्होंने उस दिन केवल बातों-बातों में ही 'विवाह न करना अच्छा है' नहीं कहा था वे वास्तव में इस उक्ति पर विश्वास करते थे। वे मानते थे कि जब तक इंसान खुद को पूरा संघर्षों में नहीं झोंक देता तब तक वास्तव में कोई आंदोलन पूरा नहीं हो पाता। और इस रास्ते में सबसे बड़ी बाधा विवाह ही है।

एक दिन अचानक उन्हें अपने पिता का पत्र मिला। उन्होंने लिखा था कि उनका रिश्ता तय हो गया है और विवाह की तारीख के दो दिन पहले उन्हें घर पहुंचना है। पत्र पढ़कर उन्हें बहुत दुख हुआ। अपने भविष्य को लेकर उन्होंने न जाने कितनी कल्पनाएं की थीं। क्या वे सब ध्वस्त हो जाएंगी ? एक अनपढ़, गंवार लड़की उनके जीवन में आकर उनसे संसार का सारा सुख, स्वतंत्रता मांगेगी। यदि वे उसकी मांगों को पूरा न कर पाएंगे तो उनका दांपत्य-जीवन कटु हो जाएगा। और यदि वे उसकी मांगों को पूरा करने में लग गए तो वे गांव के साधारण जमींदार ही रह जाएंगे। जीवन में वे और कुछ नहीं कर पाएंगे। पर अपने पिता की बात को वे ठुकराएं कैसे ?

अंत में उन्होंने अपने पिता को एक पत्र लिखा। उसमें उन्होंने लिखा कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए अनेक योजनाएं बनाई है पर ब्याह उसमें रुकावट बन जाएगा। ब्याह के लिए तो अभी उमर पड़ी है। इतनी जल्दबाजी की क्या आवश्यकता है ? पत्र तो उन्होंने लिख दिया था पर उनके मन के अंदर से जैसे उन्हें कोई कह रहा था कि पिताजी कदापि नहीं मानेंगे। तो फिर क्या

होगा ? क्या पिताजी की आज्ञा की अवमानना की जा सकती है ? ब्याह तो हो ही जाएगा पर जीवन भी तो बरबाद हो जाएगा। यह विचार जैसे-जैसे उनके मन में दृढ़ होता जा रहा था वे स्वयं को उतना ही कमजोर और असहाय महसूस कर रहे थे।

9

नवीन अपने मन की सारी बातें प्रकाश के सामने निःसंकोच खोल देते थे। और आज जब उनका विवाह उनके आदर्शों से टकरा रहा था और उनकी भविष्य की योजनाओं को डुबाने में लगा था तो उन्होंने अपने मित्र की राय लेना अत्यावश्यक समझा। विप्लव विज्ञान के धुरंधर व्यक्ति के रूप में चारों ओर प्रसिद्ध हैं। इस धरती पर जिस युग में भी जो-जो क्रांतियां हुई हैं उनका विप्लव ऐसे वर्णन करते हैं जैसे खुद उन क्रांतियों में उन्होंने सक्रिय हिस्सा लिया हो। इसके अलावा बाढ़, अकाल आदि होने पर वे जिस तत्परता के साथ लोगों की सेवा करते हैं उससे वे लोगों के अति आत्मीय बन गए थे। नवीन के अलावा कॉलेज के दूसरे अनेक छात्र भी उनके भक्त हो गए थे। महेंद्रबाबू वो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उन्हें 'वीर समाज' के विषय में सबसे पहले बताया था।

प्रकाश के घर पहुंचकर उन्होंने देखा कि वे घर पर नहीं हैं। उनके नौकर ने बड़े बेचैन होकर कहा कि आज वे सुबह से ही न जाने कहां गए हैं। आज तो वे दोपहर के खाने पर भी घर नहीं आए। नवीन बाबू वहीं बैठकर उनका इंतजार करने लगे। वे बैठकर उन तपस्वी जैसे प्रकाशबाबू के बारे में सोच रहे थे, जिसका अपना खुद का घर संसार नहीं है पर फिर भी वह इस देश की गरीब जनता के लिए कितना रो सकता है।

एक बार कही हुई उनकी बात उन्हें याद आ रही थी। उन्होंने कहा था, "पराधीनता केवल हमारी ही शत्रु है ऐसी बात नहीं है। एक हाकिम से लेकर हर भूखा गरीब आदमी इस देश का अपना है। सभी हमारे अपने हैं, भाई हैं पर कोई भी किसी का मुंह देखने को तैयार नहीं है। ऐसे ही निर्जीव व्यवहार का फायदा उठाकर समुद्र किनारे की नमकीन जमीन में नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ बढ़ने-सा अत्याचार भी सिर उठाए जा रहा है। और इसके फलस्वरूप मनों की निर्जीवता भी बढ़ी जा रही है। ये तो एक गोरखधंधा मचा हुआ है। इसे दूर करने के लिए कर्मठ देश-भक्तों की आवश्यकता है…।"

वे इन विचारों में डूबे हुए थे कि अचानक उनके कानों में सुनाई दिया, "क्यों भाई नवीन, कैसे आना हुआ ?" उसके बाद सामान्य औपचारिक कुशल-क्षेम के पश्चात् प्रकाश गंभीर स्वर में कहने लगे थे, "नवीन, जिस समय का मुझे इंतजार था, वह आ गया है। महात्मा गांधी एक विशाल जन-आंदोलन करने जा रहे हैं। इससे सौ वर्षों से दबी, पिसी भारत की जनता में आशा का संचार होगा…। इसके लिए तुम और तुम्हारे दोस्त सब तैयार हो न ?"

नवीन ने इस आंदोलन के बारे में पहले भी सुना था। पर आज प्रकाश के आह्वान पर वह भाव-विभोर हो गया था। इसके बाद नवीन ने कुछ चिंतित होकर प्रकाश की ओर देखते हुए कहा था, "अवश्य, वही तो मेरे जीवन का आदर्श है।"

10

कुछ दिनों के बाद पूरे भारत में एक आंदोलन छिड़ गया था। उसके अनुसार, अंग्रेज सरकार के साथ असहयोग करना होगा।

उनके स्कूल उनकी कचहरी, उनकी पदवी सब कुछ छोड़ देना होगा। विशेषकर छात्रों से स्कूल, कॉलेज छोड़ देने का आह्वान किया गया था। इस हाल में 'वीर समाज' के नेता महेंद्रबाबू क्या करेंगे, उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वे एक प्रसिद्ध वकील बनेंगे, सभाओं में जाकर भाषण देंगे, पत्र-पत्रिकाओं में अच्छे लेख लिखेंगे, अपनी मनपसंद जीवनसंगिनी के साथ कटक शहर में मकान बनाकर रहेंगे इन सबके अलावा एक देशभक्त, समाज-सुधारक और एक युग प्रवर्त्तक के रूप में भी उनका खूब नाम होगा, ये ही सब सपने थे महेंद्रबाबू के। पर उन्हें लगा जैसे इस आंदोलन की बाढ़ में उनके मन का सब कुछ बह

जाएगा। तो क्या इस बाढ़ के प्रवाह से दूर रहकर वे एक नगण्य, निंदित और जनता में सबसे अलग-थलग जीवन बिता पाएंगे ? इस द्वंद्व में पड़कर वे बेचैन हुए जा रहे थे।

प्रकाश के सुझाव से 'वीर-समाज' की एक बैठक बुलाई गई, उसमें प्रकाश ने भी हिस्सा लिया। उस बैठक में चर्चा का केंद्र-बिंदु था कि 'वीर-समाज' इस आंदोलन में भाग लेगा या नहीं। महेंद्रबाबू ने बीच में आपत्ति उठाई और बोले कि हमारा देश के प्रति जैसा कर्तव्य हैं वैसे ही हमारा, समाज और माता-पिता के प्रति भी कर्तव्य बनता है। अतः उन्होंने परामर्श दिया कि इन सब बातों के लिए और कुछ दिन इंतजार कर लिया जाए तो अच्छा है। पर प्रकाश ने सबकी ओर देखते हुए कुछ गंभीर होते हुए कहा, "इंतजार का मतलब है कि खुद कुछ निर्णय न लेना, धारा में तिनके-सा बह जाना और भाग्य कहकर सब स्वीकार कर लेना। पर यह तो एक पुरुष को शोभा नहीं देता…।" और इस तरह कहते हुए उन्होंने सभी को आह्वान किया कि नव-प्रभात की बेला में नव-सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों सभी आकर भीगें। तभी नवीन बोल पड़े, "मैं अपना संकल्प सभी को बता देता हूं, कि मैं पढ़ाई छोड़कर इस आंदोलन में अवश्य कूदूंगा।" बाकी सभी चुप थे। बस इस तरह 'वीर-समाज' की बैठक समाप्त हो गई थी। नदी की बाढ़ से बांध के समीप का यह पहला घर था जो टूटा था।

11

सन् 1921 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सारे देश में जो भयंकर तूफान मचा था, उससे अनेक लोगों के जीवन में हलचल पैदा हो गई थी। उनमें से महेंद्रबाबू भी एक थे। महेंद्रबाबू अपनी

बिखरती, टूटती अभिलाषा को समेटने की कोशिश में लगे थे। उन्हें उस समय की परिस्थिति पर बहुत क्रोध आ रहा था। विशेषकर तब, जब कॉलेज के छात्रों और अध्यापकों की दृष्टि उन्हीं पर लगी हुई थी कि वास्तव में ये युवानेता किस रूप में इस स्वतंत्रता संग्राम में कूदेगा।

उनके मन की इस कशमकश की हालत में एक दिन अचानक उनके पिता उनके पास पहुंच गए। इस बीच उन्हें जिले के मजिस्ट्रेट से एक पत्र मिला था। उसमें लिखा था कि उनका लड़का एक सरकार विरोधी आंदोलन में भाग लेने को तैयार है। साथ ही उस पत्र में चेतावनी भी दी गई थी कि वे अपने पुत्र को काबू में रखें अन्यथा उसके भविष्य के साथ-साथ उनके खुद के ऊपर भी परेशानी आ सकती है। उन्होंने पत्र बेटे को देते हुए क्रोधित स्वर में कहा, "यह क्या है ? तू यहां पढ़ने आया है या आवारा लड़कों के साथ आवारागर्दी करने ?" जब महेंद्रबाबू पत्र पढ़ रहे थे, उस समय भी उसके पिता धाराप्रवाह बोलते चले जा रहे थे, "मैं एक डिप्टी हूं। एक डिप्टी का बेटा होते हुए भी तेरे नाम पर यह रिपोर्ट ! और एक आध साल के बाद तेरे लिए नौकरी रखी है इसके लिए मैंने पहले से ही बोल रखा था पर इस समय में यह रिपोर्ट ? अरे इससे तेरा जीवन बर्बाद हो जाएगा और मेरे लिए भी आफत आएगी।" उसी दिन महेंद्रबाबू को साथ लेकर वे पुलिस इंस्पेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट के पास गए। उन्हें अपने बेटे के बारे में समझाया कि यह पूर्णतः निर्दोष है। उन्होंने अपने बेटे का नाम कटक कॉलेज से कटवा दिया और उसे अपने साथ अपनी नौकरी की जगह पर ले गए। इस घटना से महेंद्रबाबू का मनोबल इतना टूट गया कि फिर दुबारा जुड़ ही न सका।

12

जनार्दनबाबू को जिला मजिस्ट्रेट के पास से जैसा पत्र मिला था ठीक वैसा ही पत्र रामहरिबाबू को भी मिला था। चूंकि अपने बेटे को नौकरी पर लगाना उनका उद्देश्य न था इसलिए वे उस पत्र से ज्यादा विचलित न हुए थे। अपने बेटे की पहली चिट्ठी पाकर बस उन्हें यही डर था कि वह ब्याह नहीं करना चाहता। कहीं वह घर छोड़कर सदा के लिए ही न चला जाए। अब इस मजिस्ट्रेट की चिट्ठी से उन्हें एक नई राह सूझ गई थी। उन्होंने वह चिट्ठी देकर एक आदमी को, अपने बेटे को बुला लाने के लिए कटक भेजा। पर उस समय तक नवीन अपनी पढ़ाई छोड़कर पूरी तरह से असहयोग आंदोलन में कूद पड़े थे। सभाएं, जुलूस, विदेशी कपड़ों की दुकानों के आगे धरने लगातार होते चले गए और वे बढ़-चढ़कर उसमें हिस्सा लेने लगे थे। इसी समय पिताजी का बुलावा उनके पास पहुंचा। उन्हें भीतर से ऐसा लग रहा था कि जरूर उन्हें पिताजी इस आंदोलन में सक्रिय रूप में भाग लेने की अनुमति नहीं देंगे। अब वे क्या करें ? वे चिंतित हो गए थे। पहले उन्होंने सोचा कि खुद जाकर अपने माता-पिता को समझा-बुझा कर उनसे सहर्ष अनुमति ले आना ही ठीक होगा पर बाद में उन्होंने सोचा कि पत्र द्वारा भी वे सब कुछ अच्छी तरह समझा सकते हैं। वे अभी इस ऊहापोह से उबरे भी न थे कि उनके पिता रामहरिबाबू वहां पहुंच गए।

रामहरिबाबू के अचानक वहां पहुंच जाने का कारण था कि अभी तक उनके लड़के ने गांधीवादियों के साथ मिलकर जो-जो काम कर डाले थे उससे उनकी जमींदारी छिन जाने का डर था। साथ ही उनके बेटे को जेल भी हो सकती थी। उन्होंने अपने बेटे का कोई भी तर्क-वितर्क न सुना और उसे तुरंत अपने साथ

चलने का आदेश दे डाला। अंत में मजबूर हो नवीन अपने पिता के पीछे-पीछे गांव की ओर चल दिए थे। रामहरिबाबू पहले एक दो दिन तो चुप रहे पर बाद में उन्होंने धीरे-धीरे अपने बेटे को समझाना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा—"अरे हमारे पास क्या नहीं है ? अब तुम्हारी जितनी पढ़ाई हो गई उतनी ही बहुत है बस अब घर बसाने की बात सोचो। बहुत से बक-झक करनेवालों के साथ रहने से क्या अंग्रेज-राज चला जाएगा ? और फिर ये सब एक जमींदार के बेटे को करना चाहिए क्या ? अरे हमारी जमींदारी भी तो उन्हीं अंग्रेजों की कृपा पर टिकी है, ये छिन गई तो हमारी इज्जत चली जाएगी और फिर अंत में हमें लोगों के खेतों में काम कर जीना होगा।" आदि-आदि। नवीन पिता की बातें चुप हो सुनते और सोचते—जीवन क्या जमींदार बने रहने के लिए मिला है ? पर उनके मन की बात उनके मन में ही रह जाती। क्योंकि अपने पिता को जवाब देने की आदत और साहस उनमें नहीं था।

13

रामहरिबाबू ने अपने जीवन-भर के ज्ञान का उपयोग अपने बेटे को समझाने में लगा दिया था ताकि वह वैराग्य छोड़ घर-संसार की ओर लौट आए, उसमें रम जाए। पर अंत में उनके दिमाग में एक ही विचार जोर पकड़ रहा था कि ब्याह कर देने से ही उनका बेटा रास्ते पर आएगा।

इस बीच रुपयों का बंदोबस्त न हो पाने के कारण सनातनबाबू ने खबर भेजी कि विवाह की जो तिथि निर्धारित थी उसे थोड़ा और आगे बढ़ा दिया जाए। उनके अनुरोध पर विवाह की तारीख और पंद्रह दिन आगे बढ़ा दी गई। आखिर

जमींदार के घर ब्याह था सो किसी बात की कमी न थी। नवीन को भी पता चल गया था कि उनका विवाह होनेवाला है पर उन्हें बताने की किसी ने भी जरूरत नहीं समझी थी। जैसे-जैसे विवाह की तैयारियां बढ़ रही थीं उनके मन का दुख भी वैसे ही बढ़ा जा रहा था। एक कमजोर आदमी जैसे अपने काम को पूरा करने के लिए भगवान की ओर ताका करता है वैसे ही नवीन मन ही मन सोच रहे थे कि काश यह शादी टूट जाती। पर भगवान भी कभी कमजोर आदमी की मदद करते हैं भला ?

और अंत में वह दिन भी आ गया था जब नवीन घोड़ी पर सवार हो बारात ले, लड़की वालों के घर पहुंच गया था। विवाह के बाद भी वे किस तरह अपना जीवन देश के स्वतंत्रता संग्राम में लगाएं, यही बात सदा सोचते रहते थे पर कोई मार्ग उन्हें नहीं सूझ रहा था।

लड़कीवाले बड़े गरीब हैं जानकर नवीन का मन दुखी हो गया था क्योंकि गरीब घर की लड़की आकर अपनी सभी मनोकामनाएं पूरा करना चाहेगी। लड़की के पिता से बातचीत करने से उन्हें पता चल गया था कि वे गांव के जाने-माने दलाल हैं तो उनका मन और भी दुखी हो गया था। यदि उनका ब्याह ही करना था तो क्या किसी सभ्रांत घर की शिक्षित कन्या से नहीं हो सकता था क्या ? यह सोच-सोचकर उन्हें अपने पिता पर गुस्सा आ रहा था। इधर प्रतिभा की भी यही हालत थी। उसे भी अपने माता-पिता और समाज के ऊपर क्रोध आ रहा था पर कुछ कहने की दृढ़ता और हिम्मत उसमें नहीं थी सो वह वही सब करे जा रही थी जो-जो उसे कहा जा रहा था।

ठीक समय पर विवाह हुआ। 'यथा रावणस्य मंदोदरी....' मंत्रोच्चार किया गया। प्रतिभा के हाथ के स्पर्श से नवीन की नस-नाड़ियों में एक बिजली-सी दौड़ रही थी। उनके हृदय के

किसी अज्ञात कोने से एक अस्पष्ट-सा स्वर उन्हें लगातार सुनाई दे रहा था कि 'ये तुम्हारी जीवनसंगिनी है, इसे अपना बना लो।' इधर प्रतिभा के मन में भी एक नई अनुभूति संचरित हो रही थी। अब ये चाहे बुरा हो या भला, अब तो वह जीवन भर के लिए इस व्यक्ति के साथ बंध गई है। बस धीरे-धीरे उसके मन की भावनाएं अपने पति की ओर बहने लगी थीं।

14

ब्याह हो चुका था। नवदंपति का नया संसार शुरू हो चुका था। पर सुख कहां था इस संसार में ? एक नाग को पिटारी में जबरदस्ती बंद कर देने से वह जैसे छटपटाता है नवीन की हालत बिलकुल वैसी ही हो रही थी। बस अंतर इतना था कि यह पिटारी खुद उन्हीं की बनाई हुई थी और वे सपेरा भी खुद ही थे। उधर प्रतिभा की हालत भी विचित्र-सी हुई जा रही थी। उसकी सास उसकी मां से भी ज्याद स्नेही और कोमल दिलवाली होंगी यह तो उसने कभी सोचा भी न था। ससुराल आने के ठीक दो दिन बाद ही रामहरिबाबू की पत्नी ज़ाह्नवी देवी ने उसे पास बिठाया और पुचकार कर कहने लगी थीं, "बेटी तू लक्ष्मी बन मेरे घर आई है। तुझे जो भी चाहिए मुझसे दिल खोलकर मांग लेना। मैं भी तेरे जैसे एक गरीब घर से आई थी और मेरी सास ने मेरी जो छीछालेदार की थी वो मेरा दिल ही जानता है। पर तेरी सास तो गरीब घर के दुख को जानती है सो तुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। बेटी, नवीन ही मेरा सब कुछ है। वो दुनियादारी कुछ भी नहीं जानता है। वह कहीं भी कुछ भी करे पर यदि तू पतवार ठीक से पकड़े रहेगी तो नाव ठीक से चलती रहेगी।" इधर सास के इतने

मिठास-भरे व्यवहार के साथ उसका पति उसके प्रति इतना उदासीन रहेगा यह तो उसने सोचा ही न था। नवीन उससे बिलकुल बातचीत नहीं करते थे। वह भी नवीन से कुछ दूर-दूर रहने लगी थी।

जाह्नवी देवी भी गौर कर रही थीं कि बहुत दिन हुए नवीन भी घर पर सोने नहीं आ रहा है और प्रतिभा से बात भी नहीं कर रहा है। इसलिए एक दिन अपने बेटे को बैठक में पढ़ता देखकर उन्होंने बात शुरू की थी, "बेटा, तू घर पर सोने क्यों नहीं आता ?" नवीन एकदम चिढ़कर उठ पड़े थे, बोले, "मां तुम जाओ यहां से, मुझे यहां कोई खुशी नहीं होती। मैं कहीं नहीं जाऊंगा, यहीं पड़ा-पड़ा मर जाऊंगा।" जाह्नवी देवी बड़े ही दुख और विस्मय भाव से उसे देखे जा रही थीं। उनके बेटे को आखिर हुआ क्या है ? यह अपनी बहू से पूछने पर वह उनकी गोदी में सिर रखकर बिलखने लगी थी। तब जाह्नवी देवी ने जबरदस्ती उसे अपने बेटे को बुलाने भेज दिया। किंतु जब प्रतिभा अपनी सास की बात मानकर अपना सारा मान-अभिमान ताक पर रखकर नवीन को मनाने गई तो वह उबल पड़ा। बोला, "यहां क्यों आई है ? मुझे खाएगी क्या ? जा–चली जा यहां से ?"

प्रतिभा बहुत अपमान, दुख और क्रोध के भाव लिए वहां से लौट आई थी। वह अपने बिस्तर पर लेटकर रोने लगी थी। जाह्नवी देवी की आंखों में भी आंसू आ गए थे, पर वे समझ नहीं पा रही थीं कि उनका बेटा ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है।

15

नवीन रात भर नहीं सोए थे। आज की परिस्थिति में उनका क्या कर्त्तव्य होना चाहिए, यही सोचते-सोचते उनकी आंखों की नींद उड़ गई थी। प्रकाश की बात उन्हें याद आ रही थी। एक बार उसने कहा था, "जिस बात को तुम ठीक समझते हो उसे मां-बाप के विरोध करने पर भी कर पाओगे ?" बिलकुल ठीक

ही तो है। माता-पिता का विरोध करना जरूरी है, क्योंकि पुरातन के साथ जब तक नूतन का संघर्ष न हो तब तक क्रांति शब्द का कोई अर्थ ही नहीं होता। मां के पेट से बच्चे का जन्म भी तो उसके संघर्ष का ही परिणाम होता है। इधर प्रतिभा के सौंदर्य या अच्छे व्यवहार ने उसके दिल को नहीं छुआ था, ऐसी बात भी न थी। पर उनके मन में यह दृढ़ भावना थी कि क्रांति और विवाहित जीवन ये परस्पर विरोधी बातें हैं। इसके अलावा वे सोच रहे थे कि उनके बिना यहां उनकी पत्नी को कोई तकलीफ नहीं होगी। इसलिए उसे छोड़कर जाने में उसका कोई नुकसान नहीं होगा। इस तरह से अनेक बातों को सोचने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि वे घर छोड़कर चले जाएंगे। फिर उन्होंने सोचा, कि कहीं पिता के सामने जाने से उनके अंदर की कोई कमजोरी न बाहर आ जाए इसलिए रातों-रात घर से चले जाना अच्छा होगा। और बस, एक दिन जब रात का अंतिम पहर बाकी था वे कुछ कपड़े, एक शाल और कुछ रुपए, जो उनके पास थे, लेकर घर से निकल गए थे।

अगले दिन सुबह जब पता चला कि नवीन घर पर नहीं हैं और न ही कहीं उनका पता चल रहा है तो रामहरिबाबू गुस्से और दुख से पागल हो गए। वे क्या करें, उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। उन्हें अपनी पत्नी और बहू के ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था। फिर भी उनका सांसारिक अनुभव यही कह रहा था कि न तो उनका बेटा पागल हुआ है और न ही वह आत्महत्या करनेवालों में से है। वह जरूर गांधीवादियों में घुस गया होगा। कोई बात नहीं। कल यदि उनकी जमींदारी पर आंच आएगी तो वे अपने पुत्र को अपनी जमीन-जायदाद से बेदखल कर देंगे, और यदि उनकी जमींदारी के ऊपर कोई आंच नहीं आती तो उन्हें क्या, वो घूमता रहे जहां घूमना है।

प्रतिभा तो अपना मुंह भी किसी को दिखा नहीं पा रही थी। उसे लग रहा था कि कहीं लोग ये न कहने लगें कि सारे फसाद की जड़ यही है। इसी के कारण नवीन घर छोड़कर चला गया है। साथ ही वह मन ही मन बहुत दुखी भी थी। वह सोच रही थी कि वह फूल तोड़ने चली थी पर निदल तक हाथ पहुंचते ही उसकी उंगुली में कांटा चुभ गया। फिर भी जाह्नवी देवी उसे बराबर सांत्वना दे रही थीं कि उनका बेटा कभी भी बुरा काम नहीं कर सकता, जरूर उसका मन किसी कारण से टूट गया है। वो जहां भी गया है एक दिन लौट आएगा। जब बहू मेरे पास है तो बेटा जरूर आएगा।

16

नवीन ने घर छोड़ दिया था और रेलवे स्टेशन पहुंच गए थे। रास्ता कैसे कट गया, वे जान भी न पाए थे। बस वे मन ही मन पिताजी के ऊपर, प्रतिभा पर और खुद अपने ऊपर भी गुस्सा हुए जा रहे थे। हां बीच-बीच में अपने जीवन के उज्ज्वल भविष्य का सपना सोचकर उनकी गति बीच-बीच में धीमी हुई जा रही थी। रेल में तृतीय श्रेणी में बैठकर अनेक चिंताओं के भंवर में डूबते-उतराते वे कटक स्टेशन पहुंच गए थे। रेल टिकिट लेने के बाद अब उनके पास इतने पैसे नहीं थे जिससे कि वे तांगा कर सकते। और वैसे यहां तांगा भी नजर नहीं आ रहा था। सो वे पैदल चलकर ही स्वराज आश्रम तक आ गए थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि सारी दुकानें बंद हैं। सारा शहर सुनसान है। कहीं-कहीं पर पुलिस कांस्टेबल लाठियों के जोर पर दुकानदारों को धमकी देकर दुकानें खुलवाने पर जोर दे रहे थे, पर कोई भी उनकी धमकी से नहीं डर रहा था। यह सब देखकर

गर्व से उनका सीना चौड़ा हुआ जा रहा था। वे मन ही मन सोच रहे थे कि सचमुच 1857 के सिपाही विद्रोह के बाद यही 1921 का असहयोग आंदोलन ही भारत का द्वितीय स्वाधीनता संग्राम है। उस समय कुछ राजा, नवाब और उनके सैनिकों आदि ने विद्रोह किया था, पर इस बार तो सारा देश ही विद्रोह कर रहा है। वे मन ही मन अपनी सारी शक्ति और सारा उत्साह इस आंदोलन में झोंक देने की बात सोच रहे थे।

आश्रम पहुंचकर उन्हें पता चला कि प्रकाश ही इस समय आश्रम का संचालक है। इससे वे और भी खुश हो गए थे। आश्रम में लगभग डेढ़ सौ लोगों की चहल-पहल थी। उनमें से कुछ लोग अफीम-गांजा तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों के आगे धरना देने जा रहे थे। बाकी कुछ जोर-जोर से राष्ट्रीय गीत गा रहे थे और कुछ भोजन पका रहे थे। सभी तो सत्याग्रही और संग्रामी थे इसलिए कोई भी किसी का परिचय पूछने की आवश्यकता महसूस नहीं कर रहा था। नवीन प्रकाश से मिलने को उत्सुक थे। पर पूछने पर पता चला कि प्रकाश प्रायः आश्रम में न के बराबर ही रहते हैं। सुबह-सुबह ही निकल जाते हैं और रात को नौ बजे के लगभग लौटते हैं। वे कहां खाते हैं, क्या करते हैं, कोई नहीं जानता।

17

उस दिन प्रकाश को लौटने में रात के लगभग बारह बज गए थे। नवीन को देखते ही बड़ी खुशी से उन्होंने उसे गले लगा लिया था। बोले, "अरे, मैं तो तुम्हारी राह देख रहा था।" थोड़ी देर के बाद वे फिर बोल उठे, "मैं तुम्हारी राह देख रहा था यह मैंने केवल तुम्हारे स्वागत में ही नहीं कहा है। जानते हो,

यदि तुम नहीं आते तो शायद मेरा काम ही नहीं हो पाता।'' यह सुनकर नवीन गद्‌गद् हो उठे। कौन-सा काम उन्हें दिया जाना है, यह जानने को वे उत्सुक हो उठे थे। पर काम बताने से पहले प्रकाश और नवीन के बीच कुछ इस प्रकार सवाल और जवाब हुए—

''अच्छा नवीन, इस आंदोलन में शामिल होने के लिए तुम्हें किन-किन समस्याओ का सामना करना पड़ा ?'' प्रकाश ने पूछा था।

''समस्या ! कुछ भी नहीं। मैंने तो इस आंदोलन में जुड़ने का पहले से ही निश्चय कर रखा था।'' पर प्रकाश को नवीन का यह उत्तर कुछ संतोषप्रद न लगा सो उन्होंने फिर पूछा :

''नहीं, मुझसे बात छुपाने से नहीं चलेगा। मुझे सब साफ-साफ बताओ। तुममें और मुझमें कुछ भी छुपा नहीं होना चाहिए।'' और फिर अंत में मन की दुविधा को हटाते हुए आखिर नवीन को कहना पड़ा :

''पिताजी इस बात से राजी न थे। मैं उन्हे बिना बताए चला आया हूं।''

''हूं ! अगर वे तुम्हें वापिस लेने आ जाएं तो ?''

''नहीं, वो नहीं आएंगे।''

''अगर आ जाएं ?''

(बड़ा सोचते हुए उन्होंने धीरे-धीरे कहा) ''मैं नहीं जाऊंगा।''

''तुम अविवाहित हो ना ?''

इस प्रश्न का उत्तर नवीन ने बड़े ही दुविधाग्रस्त होकर दिया था, कि वे विवाहित हैं। पर साथ ही कहा था कि विवाह उनकी मरजी से नहीं बल्कि जबरदस्ती किया गया है।

प्रकाश ने मुस्कराकर कुछ समय चुप रहने के बाद पूछा

था, "तुम्हारी पत्नी का इस विषय में क्या विचार है ?"

उत्तर को इधर-उधर घुमाते हुए नवीन ने कहा था, "मेरे ख़याल से विवाह क्रांति के रास्ते में बाधा है। इसलिए मैं विवाह नहीं करना चाहता था। इसलिए आज भी मैं खुद को विवाहित नहीं मानता हूं।"

इस पर प्रकाश ने कुछ गंभीर होकर पूछा था, "फिर तुम्हारी पत्नी का स्थान कहां है ?"

"मैं उसके लिए जिम्मेदार नहीं हूं।"

इस पर प्रकाश धीरे-धीरे कहने लगे थे, "वो तो ठीक है, पर यह तर्क ज्यादा दिन नहीं चलने वाला। एक न एक दिन तुम्हें रुक जाना पड़ेगा और वापस लौटना पड़ेगा। हो सकता है कि आज के इस तर्क के लिए भी तुम्हे उस समय पश्चाताप करना पड़े।"

नवीन ने कुछ ज्यादा ही बेचैन होते हुए जोर से कहा, "नहीं, वैसा कभी नहीं होगा।" और उस दिन रात भर नवीन अपने मन ही मन इसी बात को दोहराते रहे थे—नहीं, नवीन औरत के आकर्षण में फंसकर कभी भी क्रांति से दूर नहीं भागेगा ! प्रकाश को खुद अपने विचार बदलने होंगे।

18

अपने इस नए जीवन को जीते हुए नवीन ने जाना था। निःस्वार्थ त्याग और उसमें मिलनेवाला दुख, सुख, स्वच्छंदता और भोग-विलास से कितना ज्यादा मीठा और आत्मशांति देनेवाला होता है। शुरू-शुरू में दूसरे स्वयंसेवकों की तरह कंधे पर थैला लटकाकर द्वार-द्वार पर मुट्ठीभर अन्न मांगने में उन्हें कुछ अटपटा-सा लगता था। पर बाद में उन्हें समझ में आ गया

था कि इससे उचित परिमाण में अन्न इकट्ठा हो पाता हो या न हो पर इससे हर गरीब और अमीर हृदय की सहानुभूति इस क्रांति के प्रति पता चल जाती थी। वास्तव में यही तो उन क्रांतिकारियों की आवश्यकता थी। इसी तरह शराब की दुकान के आगे धरना देते समय शराबियों की असभ्य भाषा तथा वहीं आसपास रहनेवाली वेश्याओं के अपमान को भी उन्होंने सह लिया था। उन्होंने सोच लिया था कि चाहे जो भी हो पर ये भी तो हमारे भाई-बहन की तरह ही हैं। चाहे इनकी गाली-गलौच सहनी पड़े, पर यदि ये सुधर जाते हैं तो हमारा काम सार्थक हो गया।

प्रकाश नवीन के इन कामों को बड़े गौर से देखते थे। एक दिन उन्होंने नवीन को अपने कमरे में बुलाया और धीरे-धीरे कहने लगे—

"तुम्हें याद है न नवीन, मैंने उस दिन तुमसे कहा था कि मुझे तुमसे काम है इसलिए मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था ? वास्तव में वह मैं केवल तुम्हारा उत्साह बढ़ाने के लिए नहीं कह रहा था। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है। तुम इस आश्रम का सारा कार्यभार अपने ऊपर ले लो। क्योंकि मुझे चारों तरफ जाना होगा। चारों ओर जागृति लानी होगी। मैं इस क्रांति के लिए अनेक लोगों को तैयार करना चाहता हूं। वे लोग इस क्रांति की आग को जिंदा रखेंगे, बिलकुल बैटरी में विद्युत की तरह। ऐसा हमें करना होगा ताकि आज का यह उत्साह कल कुम्हला न जाए। जरूरत पड़ने पर पावर-हाउस उन्हें फिर से बिजली की पूर्ति करेंगे। मेरा पूरा विश्वास है नवीन, कि तुम भी एक बड़े पावर हाउस की भूमिका निभाओगे।"

नवीन टकटकी लगाए प्रकाश की ओर देखे जा रहे थे। प्रकाश ने एक कागज पर लिख दिया था, "कटक आश्रम का

कार्यभार अब नवीन के हाथों में होगा। वे ही इस आश्रम के संचालक होंगे—प्रकाश।" यह कागज प्रकाश ने नवीन की ओर बढ़ा दिया था।

19

'पावर हाउस' वाली बात सुनकर नवीन बहुत उत्साहित हो गए थे। आश्रमवासियों के मन में अधिक से अधिक उत्साह और शौर्य कैसे जगाया जाए, इस दिशा में उनके कदम बढ़ने लगे थे। इसी तरह अनेक योजनाएं बनाते-बनाते उनके मन में एक नई योजना आ गई थी। उन्होंने अपने सहयोगियों से भी परामर्श किया। उनकी योजना थी कि दो दिन के बाद डिप्टी पद के निर्वाचन के लिए जो प्रार्थी जिला मजिस्ट्रेट के पास साक्षात्कार देने आएंगे, उन्हीं के सामने धरना दिया जाए। वे लोग वहां लेट जाएंगे और प्रार्थियों को सरकारी नौकरी करने से मना करेंगे।

निर्दिष्ट दिन योजनाबद्ध कार्य शुरू हो गया। मजिस्ट्रेट साहब अंदर कमरे में बैठ गए थे। एक-एक प्रार्थी को अंदर बुलवाकर साक्षात्कार होना था। सबसे पहले प्रार्थी विनोदबाबू सत्याग्रहियों को पार कर आगे नहीं जा पाए। इस पर मजिस्ट्रेट के आदेश से चपरासी ने अगले नाम की घोषणा की। वह आकर बोला—"विनोदबाबू का नाम खारिज हो गया है। अब महेंद्रबाबू आएं।"

महेंद्रबाबू धीरे-धीरे बरामदे के ऊपर चढ़ने लगे थे। तभी नवीन अचानक सामने आकर दरवाजे के पास लेट गए थे। बोले, "महेंद्र, हमेशा क्रांति-क्रांति की रट लगानेवाला तू, क्या आज हमसे अलग हो जाएगा ?" यह बात सुनकर महेंद्रबाबू

पहले थोड़ा दब से गए पर बाद में अचानक गुस्से से बोल पड़े, "नवीन, तूने भी तो विवाह न करने की प्रतिज्ञा की थी ? झूठे !" नवीन के प्रति उपजे क्रोध से ही वे स्वयं को समझा पाए थे कि नवीन तथा उनके साथ वहां पड़े हुए लोगों की 'लौट जाओ, वापिस जाओ' की चीखों से इतना विशाल अंग्रेज साम्राज्य उड़ नहीं जाएगा। यदि वे सोचते हैं कि केवल नारों से वे अंग्रेजों को भगा देंगे तो यह केवल उनकी वाचालता ही होगी। अरे किसी भी स्थिति में रहकर मनुष्य देश-सेवा कर सकता है। पर पहले अपनी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होनी चाहिए। और फिर उन नारों की परवाह न करते हुए अपने पैरों को झटककर वे आगे बढ़ गए थे।

कुछ समय के बाद वहां पुलिस आ गई थी। उसने अनेक स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस भीड़ को दूर ढकेल कर खुद घेरा बनाकर खड़ी हो गई थी। उस दिन स्वयंसेवक और भीड़ में अनेक लोग केवल नारा लगाने के अतिरिक्त और कुछ भी न कर सके थे। बाद में पता चला कि महेंद्रबाबू के ही विशेष अनुरोध पर मजिस्ट्रेट ने ऐसी व्यवस्था की थी।

20

नवीन के ऊपर महेंद्रबाबू अचानक क्यों फट पड़े थे। इसका कारण शायद वे खुद नहीं दे पाएंगे। पिताजी के आदेश से ही वे डिप्टी की नौकरी के लिए प्रार्थी हुए थे। मजिस्ट्रेट के साथ साक्षात्कार कैसे दिया जाना है, इसी की जानकारी के लिए वे कुछ समय पहले से कटक आ गए थे। इस बीच वे अपने गांव भी गए थे। वहां जाकर उन्हें पता चला कि प्रतिभा का विवाह नवीन के साथ हो गया है। उन्हें बहुत गुस्सा आया कि

पाठशाला के शिक्षक ने भी उन्हें इस विषय में कुछ नहीं बताया। वे जो भी किताब और मासिक पत्रिका सिद्धेश्वर के लिए भेजते थे, वह भी सब बेकार चला गया। फिर उन्हें नवीन पर गुस्सा आया कि उसने पहले उन्हें क्यों कुछ नहीं बताया। अरे हां, उन्होंने भी तो नवीन को अपने मन में प्रतिभा के प्रति उपजे मनोभाव के विषय में नहीं बताया था, तो फिर वह क्यों उन्हें कुछ बताने लगा। अब इस पर उन्होंने कुछ नहीं सोचा। प्रेमगत ईर्ष्या की यही विशेषता नहीं होती कि दूसरे के प्रति अपने क्रोध और विद्वेष का कारण खुद ही ढूंढ़ने पर न मिले। वे जिसे बहुत चाहते थे, उसका विवाह किसी और के साथ हो गया। यह उन्हें अन्याय की तरह लगा। वे आगे सोचते जा रहे थे कि प्रतिभा जैसी लड़की का ब्याह नवीन जैसे नीरस आदमी के साथ हो जाना भी एक अत्याचार ही है। मैं प्रतिभा को ओड़िसा की एक प्रतिष्ठित नारी बना सकता था। पर नवीन के कारण मैं ऐसा न कर सका। उनकी ईर्ष्या का एक कारण और था कि जब वे छात्रनेता थे तो उस समय नवीन उनके पीछे-पीछे एक अनुचर की भांति डोलता रहता था। पर आज वे इस आंदोलन में हिस्सा न ले पाने के कारण वह खुद अगुआ बन बैठा है। बस इसी तरह ईर्ष्या और क्रोध के अलावा अपने पूर्व मित्र के प्रति उनके हृदय में और कोई भाव न थे।

21

उस दिन मजिस्ट्रेट के सामने नवीन तथा अन्य स्वयंसेवकों ने जो धरना दिया था उसी के फलस्वरूप नवीन को एक साल का सश्रम कारावास का दंड मिला था। बाकी सभी स्वयंसेवकों को बीस-बीस बेंत की मार की सजा मिली थी। 'तुम स्वयं को दोषी

मानते हो या निर्दोष' यह न्यायाधीश के पूछने पर नवीन ने बड़े ही दृढ़ और गंभीर स्वर में कहा था, "अपने देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए किया गया कार्य यदि अपराध कहलाता है तो मैं एक अपराधी हूं।" उनका बार-बार यह निर्भीक उत्तर सुनकर, कचहरी में खड़ी भीड़ के मन में भी स्वतः ही एक निर्भीकता का भाव हिलोरें लेने लगा था। वे सब अचानक 'महात्मा गांधी की जय !' बार-बार चिल्लाने लगे थे। न्यायाधीश ने जब उस भीड़ को बाहर चले जाने का आदेश दिया तो वे सब और भी जोर-जोर से महात्मा गांधी की जयकार करने लगे थे।

दंडादेश लेकर नवीन को कटक जेल की ओर ले जाने लगे। जेल के फाटक के बाहर तक पहुंचकर बाहर की दुनिया से विदाई-सी लेते हुए उन्होंने चारों ओर देखा। उनका हृदय रो रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे अपने किसी प्रिय मित्र से बिछड़े जा रहे हों। चारों ओर वही चिर-परिचित दृश्य थे—तांगे चल रहे थे, साइकिल की दुकान पर टायर में हवा भरी जा रही थी, सामने एक भिखारी भीख मांग रहा था। तभी उन्होंने देखा कि प्रकाश के नेतृत्व में एक विराट जुलूस राजपथ से जा रहा था। उस जुलूस की विशेषता यह थी कि उसमें स्त्रियों की संख्या बहुत ज्यादा थीं, साथ ही वे लोग 'महात्मा गांधी की जय' के साथ 'नवीनबाबू की जय' के नारे भी लगा रहे थे। प्रकाश उस जुलूस के सामने एक वीर की तरह चल रहे थे। इस दृश्य को देखकर नवीन एक क्षण के लिए आत्म-विभोर हो गए थे। पर बाद में उनके मन में विषाद की एक धारा दौड़ गई थी, क्योंकि वे सोच रहे थे कि उन्हें इन गतिविधियों से अब एक साल तक दूर रहना होगा। एक गहरी सांस लेकर वे जेल के अंदर चले गए थे।

22

जेल में नवीन अपने नए रूप को देखकर खुद ही अचरज कर रहे थे। आधी जांघों तक ढका जांघिया, बिना बाहों का कमर तक कुर्ता और दोनों के बीच-बीच में काली-काली धारियां, यही वहां की पोशाक थी। गले में एक इंच मोटी तिकोनी लकड़ी की छोटी सी तख्ती लटक रही थी। उस पर कैदी नंबर तथा सजा की अवधि लिखी हुई थी। वह तख्ती पतली-सी लोहे की तार से सभी कैदियों ने गले में लटका रखी थी। अपने इस नए रूप से वे थोड़ा दुखी थे। पर तभी उन्हें लगा जैसे उनके अंदर कोई गरज कर बोल रहा हो—"अरे, यही तो तुम्हारा त्याग है, यही तपस्या है। इसी से तो भारतमाता परतंत्रता की बेड़ियों से छूटकर आजाद होगी।"

एक बार एक-एक करके जेल के दूसरे कैदी नवीन के चारों ओर बैठ गए थे। उनसे पूछने लगे थे—कब गांधी राजा बनेंगे, कब अंग्रेज जाएंगे आदि-आदि। 'स्वराज अवश्य आएगा' ऐसी दृढ़ आवाज नवीन से सुनकर सभी आश्वस्त हो गए थे। वे लोग नवीन को प्यार से 'स्वराजबाबू' कहकर पुकारते थे। सभी मन ही मन सोच रहे थे। इन स्वराजबाबू को अपनी-अपनी बात पहले ही कह देने से बाद में सजा से छूटने में सरलता हो जाएगी। इसी संदर्भ में किसी ने उन्हें बताया कि कैसे वह आबकारी अधिकारी की आंखों में धूल झोंककर चार महीने तक शराब बनाता रहा और अंत में जब पुलिस उसे पकड़ने गई तो कैसे मात खा गई थी। दूसरे ने बताया कि कैसे वह पुलिस की आंखों में धूल झोंककर डकैती करता रहा था। पर इन दोनों के अलावा बाकियों की बात सुनकर नवीन को आश्चर्य हुआ क्योंकि वे सभी निर्दोष थे और सजा भोग रहे थे। नवीन ने

सभी को सांत्वना दी थी कि स्वराज आने पर कोई निर्दोष दंडित नहीं होगा। न ही गांव के दलाल अपने फायदों के लिए निर्दोषों को सजा दिला पाएंगे। पर उनमें से एक चोर अपराधी राजेंद्र केवल इन दिलासों से संतुष्ट नहीं हुआ। वह बोला कि जेल से छूटकर वह भी नवीन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वराज का काम करेगा। उसकी बात से प्रसन्न होकर नवीन ने उसकी पीठ सहला दी थी। पर इससे अन्य कैदी नाराज हो गए थे। वे कहने लगे थे कि वह तो बहुत बड़ा चोर है। बात धीरे-धीरे बढ़ गई थी, वे आपस में गाली-गलौच पर उतर आए थे। अब तो नवीन को लगने लगा था कि कुछ गालियों की बौछार उस पर भी हो सकती है सो वह अपने कंबल में आंखें मूंदकर कुछ समय के लिए लेट गए थे।

23

सुनसान रात। सभी कैदी सो चुके हैं। केवल एक-दो कुत्ते जेल की दीवार के उस पार बीच-बीच में भौंक रहे हैं।

नवीन लोहे की खिड़की से बाहर की ओर टकटकी लगाकर देख रहे हैं। उन्होंने देखा, जेल के अहाते की अंतिम दीवार के भीतर की ओर जो पीपल का पेड़ है बस वह ही आज रात की चांदनी का आनंद ले रहा है। अकेला-अकेला बिलकुल स्वार्थी की तरह। नवीन के हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी है क्योंकि आज उन्हें जितना धान कूटने को दिया गया था, वे कूट नहीं पाए थे। तभी उन्हें लगा जैसे चांदनी पीपल के पेड़ से हटकर उन्हीं की ओर चली आ रही है। चलो यह इंसान भी मेरा आनंद ले। पर मेरी इस असहाय अवस्था को देख वह मेरा मजाक तो नहीं उड़ा रही है ? नहीं, नहीं, वो तो मेरा स्वागत

कर रही है। चांद के साथ ऐसी प्यार भरी बातें करते-करते उन्हें लगा कि पृथ्वी कितनी सुंदर है पर इंसान एक दूसरे पर अत्याचार कर उसे कितनी असुंदर बना देता है। सात हजार मील की दूरी पर रहनेवाले अंग्रेजों, हमें भूखा-नंगा रखने और हम पर हुकूमत करने का तुम्हें क्या अधिकार है ? तभी अचानक वे चौंक पड़े, उसी कोठरी में सोया एक कैदी 'मारो, मारो, उसे मारो, मारो, मारो...' जोर-जोर से बड़बड़ा रहा था। वे मन ही मन दुखी हो गए थे। क्या इनमें से कोई स्नेह के, परिणय के स्वप्न नहीं देखता ? तभी उन्होंने देखा कि उनके ऊपर जो चांदनी पड़ रही थी, वह खिड़की के उस पार चली गई है। तो वे उस पर गुस्सा हो उठे—यहां मैंने ही तो तुझे चाहा था। तुझे और कोई तो यहां नहीं पूछ रहा था। तू फिर भी मुझे छोड़कर चली गई ? और फिर अचानक हंसकर वे चांद को देखकर कहने लगे—"अरे मानिनी, मनाकर रही है मुझसे ? ठीक है मैं अपनी जगह नहीं छोड़ूंगा। मैं देखूंगा तू कैसे नहीं आती मेरे पास। तू कल जरूर आना। पगली तेरा जोर कितना है मुझे पता है।"

तभी दीवार के उस ओर तांगे की आवाज सुनाई दी। उनका ध्यान बंट गया था। न जाने वे बाहर की दुनिया में कब जाएंगे। अभी तो यहां उन्हें केवल दो महीने, सत्रह दिन हुए हैं अभी एक साल होने में और नौ महीने तेरह दिन बाकी हैं। यह सोचकर वे कुछ निराश से हो गए थे।

24

"बेटी मैं तो किताब पढ़ना नहीं जानती। तू तो अपने पिता के घर से बहुत सारी किताबें लाई है। जरा पढ़ तो मैं भी सुनूं।

अब इस उमर में तो कुछ धर्म की बातें।" यह बात जिस दिन से जाह्नवी देवी ने प्रतिभा से कही है, वह पढ़ने में ज्यादा रुचि रखने लगी है और अपनी सास को पोथी पढ़कर सुनाने लगी है। आधुनिक उपन्यास, कविताएं आदि उन्हें पसंद नहीं है सो केवल पुराण ही वह उन्हें पढ़कर सुनाती है। एक दिन राम वनवास का प्रसंग सुनते-सुनते उन्हें रोना आ गया था। उन्हें लग रहा था जैसे उनके बेटे नवीन को वनवास हो गया हो। न जाने वो कब घर आएगा ?"

नवीन कहां है, क्या कर रहा है, तुम जाकर खोज-खबर लेते क्यों नहीं, बस पहले यही रट लगाए रहती थीं, अपने पति रामहरिबाबू के सामने। पर एक दिन उन्होंने बहुत चिढ़कर उत्तर दिया था—"मुझे नहीं पता वो कहां गया। अरे वो जाएगा कहां। कहीं कटक में गांधीवादियों के दल में घुसा होगा। बिना वहां से मार पड़े क्या वह घर लौटेगा ?" बस उसी दिन से वे अपने पति से कुछ भी नहीं पूछती हैं। पर एक दिन प्रतिभा ने बताया कि अखबार से उनका पता चल सकता है। सो गांव के स्कूल से अखबार मंगाया जाने लगा। प्रतिभा रोज अखबार पढ़कर सास को सुनाती थी, पर उनका उसमें मन नहीं लगता था। उन्हें कई बार बीच में झपकी आ जाती थी।

एक दिन प्रतिभा की नजर एक समाचार पर पड़ी। उसमें लिखा था कि कटक स्वराज-आश्रम का भार नवीन जी के कंधों पर आ गया है। वे अब उसके संचालक होंगे। उनके संचालक होने से सारे शहर में खुशी की लहर दौड़ गई है। उस समाचर में उनका थोड़ा जीवन-परिचय भी छपा था कि एक बड़े जमींदार के बेटे होने के बावजूद वे सारे सुख-वैभव त्यागकर इस आंदोलन में कूद पड़े हैं। आदि-आदि। कुछ लज्जा भाव से प्रतिभा ने अपनी सास को यह समाचार सुनाया था। बीच-बीच

में जहां नवीन का नाम आता था वो चुप रह जाती थी। समाचार सुनकर जाह्नवी देवी रोने लगी थीं। न जाने बेटा क्या खाता है ? कहां रहता है, क्या वो हमें भूल गया आदि सोच-सोचकर वे बिलखने लगी थीं। प्रतिभा भी अब अपने को रोक न पाई थी। उसकी आंखें भी भर आई थीं। वह वहां से उठकर अपने कमरे में जाकर रोने लगी थी। देश-प्रेम और देश के लिए त्याग आदि बातों से वो ज्यादा अवगत न थी। सो वह यही सोच-सोचकर रोए जा रही थी कि मुझसे रूठकर ही वे वैरागी हो गए हैं ?

25

इस बीच महेंद्रबाबू को डिप्टी की नौकरी मिल गई है। देश-सेवा छोड़कर सरकारी नौकरी में घुस जाने से उनके मन में जो संकोच आता था उसे वे साहित्य-चर्चा आदि माध्यमों से दूर करने की कोशिश करते थे। वे कहते थे—क्या केवल आश्रम में रहकर भीख मांगने से देश की सेवा हो जाएगी, और कुछ उपाय नहीं है क्या ? अरे ओड़िया साहित्य के लिए बहुत काम करना बाकी है। महेंद्रबाबू अक्सर डिप्टी मजिस्ट्रेट बंकिमचंद्र का उदाहरण दिया करते थे। वे कहते थे कि उन्होंने भी तो इसी सक्रांतिकाल में बांग्ला साहित्य को कितना समुन्नत किया है। पर फिर भी अखबारों में नवीन का नाम, उसके भाषण तथा उसकी चर्चा से उनके तन-बदन में आग लग जाती थी। एक दिन था जब वो मेरा सहपाठी था पर आज वो एक बड़ा नेता है और मैं एक नौकर, इस भावना को वो पूरी तरह से अपने मन से नहीं निकाल पाते थे। पर फिर वे अपने मन पर जोर देकर कहते थे कि साहित्यकार का नाम सदा जिंदा रहता है

जबकि नेताओं के नाम भुला दिए जाते हैं। बस इस तरह से अपने मनोभावों को बल देकर वे सतत साहित्य सृजन करने लगे और 'उत्कल साहित्य' में छपवाने लगे थे।

अपनी भाषागत योग्यता का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए उन्होंने असहयोग आंदोलन के ऊपर एक बड़ा निबंध लिखा और 'उत्कल साहित्य' में छपवाया। उसमें उन्होंने आंदोलन की आलोचना की थी और लिखा था कि इसमें भाग लेनेवाले लोग केवल अपनी ही बर्बादी नहीं कर रहे बल्कि पूरे देश का सर्वनाश कर रहे हैं।

प्रतिभा गांव में महेंद्रबाबू के कारण जो पत्रिकाएं पढ़ा करती थी उसे वह यहां पर भी मंगाया करती थी। जिस पत्रिका में महेंद्रबाबू का कुछ लेख निकला होता उसे वह बहुत ध्यान से पढ़ा करती थी। 'उन्होंने ही तो मुझे ज्ञान का प्रकाश दिखाया है।' यह सोचकर वह उनका बहुत सम्मान करती थी। इस बार असहयोग आंदोलन के ऊपर महेंद्रबाबू का लिखा निबंध पढ़कर उसे लगा कि उसके पति जो काम कर रहे हैं जरूर वह कोई अच्छा काम नहीं है। और एक बार जब उसने अखबार में पढ़ा कि महेंद्रबाबू नवीन को पैरों से रौंदकर मजिस्ट्रेट से मिलने गए तो वह सोचने लगी थी कि महेंद्रबाबू कभी भी ऐसा घृणित काम नहीं कर सकते हैं। यह उन्होंने तभी किया होगा जबकि उसके पति के काम से उनके मन में घृणा आ गई होगी। तभी अपने पति के प्रति ऐसे भाव अपने मन में आते देख वह घबरा गई थी। उसने सोचा—मैं उन्हें कैसे घृणा कर सकती हूं, वे तो मेरे जीवनसाथी हैं...।

26

नवीन के एक साल के लिए जेल जाने की खबर अखबार में पढ़ने के बाद तो जैसे उनके घर बिजली गिर गई। न ही प्रतिभा और न ही जाह्नवी देवी को ही जेलखाने के बारे में ठीक से पता था। वे बस इतना जानती थीं कि वह एक भयावह जगह होती है, जहां चोर, डाकुओं को खूब मारा-पीटा जाता है और उनसे खूब मेहनत कराई जाती है। समाचार पढ़ते ही जाह्नवी देवी तो बेहोश-सी हो गईं और उस दिन उनके घर चूल्हा भी न जला। रामहरिबाबू तो अवाक् हो गए थे। कई दिन पहले किसी ने कुछ कहकर उनका अपमान कर दिया था तो उन्होंने

उसे जेल भिजवा दिया था। आज उनका खुद का बेटा जेल में है, लोग क्या कहेंगे—वे यही सोच-सोचकर चिंतित हो रहे थे। इसके अलावा उन्हें यह भी भय था कि लड़का तो सरकार विरोधी काम कर रहा है कहीं उनकी जमींदारी पर भी आंच तो नहीं आ जाएगी ?

बहुत रो-धो चुकने के बाद जाह्नवी देवी अब अपने पति के पीछे पड़ गई थीं कि चाहे जितने भी रुपए खर्च हों तुम जाकर मेरे बेटे को छुड़ा लाओ। "मैं क्या यह बात नहीं जानता हूं ? पर उससे कुछ नहीं होनेवाला।" कहकर रामहरिबाबू ने उनकी बात टालने की कोशिश की। जाह्नवी देवी बिफर गईं, "हां, हां तुम सब जानते हो ! रुपए-पैसे से तिजोरी भरने के अलावा और तुम जानते ही क्या हो ? एक ही तो बेटा है, न जाने वह किस हाल मे होगा…।"

पत्नी की भर्त्सना और रोना-बिलखना असहनीय हो जाने के बाद रामहरिबाबू जाजपुर में अपने वकील अक्षयबाबू से सलाह लेने गए थे। पर उनकी बात शुरू करने से पहले ही अक्षयबाबू बोले, "कल अखबार में मैंने पढ़ा कि नवीन को एक साल की जेल हो गई है। सच में रामहरिबाबू, आपने तो एक ही गांव में जमींदार रहकर नाम कमाया है पर नवीन की तो आज सारे देश में पूजा हो रही है…" इत्यादि।

बेटे की इतनी प्रशंसा सुन रामहरिबाबू अब क्या कहें कुछ समझ नहीं पा रहे थे। जिस बात का उन्हें डर था वह भी अक्षयबाबू ने हंस-हंसकर दूर कर दिया था। वे बोले, "नहीं, रामहरिबाबू वो कानून अब बदल गया है। पहले दफा 124 के अंतर्गत संपत्ति जब्त करने का प्रावधान था, पर संशोधित कानून में ऐसा नहीं है।" उन्होंने रामहरिबाबू से कहा था कि न जाने कितने बड़े-बड़े बेरिस्टर और देश के अनेक धनी तथा

गण्यमान्य व्यक्ति जैसे मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास, लाला लाजपतराय आदि जेल गए हैं। और उसी राह पर चलकर आपका बेटा भी जेल गया तथा उसने ओड़िसा का नाम रोशन किया, भई मानना पड़ेगा !

अब रामहरिबाबू और क्या कहते। अंत में मजबूर होकर वे यथाशीघ्र वहां से वापिस चल पड़े थे।

27

जाजपुर से लौटने के बाद रामहरिबाबू की चिंता कुछ कम हो गई थी। घर आकर उन्होंने पत्नी को बताया, "बेटे को जेल हो गई तो क्या हुआ ? अरी जानती हो देश के बड़े-बड़े लोग जेल में हैं। भगवान यदि करें कि महात्मा गांधी जीत जाएं फिर देखना यही बेटा और क्या-क्या कर दिखाएगा। जानती हो, चारों और नवीन का नाम, उसी की प्रशंसा···।"

रामहरिबाबू की बातें सुनकर जाह्नवी देवी को कुछ हद तक तो तसल्ली हो गई थी। पर फिर भी मां का मन था इतनी जल्दी कहां बूझनेवाला। इधर प्रतिभा के मन में अपने पति के प्रति जो मान था वह पल भर में न जाने कहां उड़ गया था। जेल में न जाने क्या-क्या सज़ा उन्हें भोगनी पड़ती होगी, यह सोचकर वह दुखी हो जाती थी। साथ ही साथ उसे अपने पति पर गर्व था कि वे लुक-छिप कर चोरों की तरह जेल नहीं गए हैं बल्कि एक वीर की तरह जेल के दरवाजे तोड़कर अंदर गए हैं। देश के और भी बड़े-बड़े लोग जेल गए हैं यह भी उसने अखबार से जान लिया था। पर महेंद्रबाबू इतने पढ़े-लिखे होकर भी इनके विरूद्ध क्यों लिखते हैं ? अब उसके मन में अपने पति के प्रति इतनी भावनाएं हिलोरें ले रही थीं कि और कोई

भी तर्क उनके आगे काम नहीं कर रहा था।

जाह्नवी देवी गौर कर रही थीं कि बहू शायद मन ही मन उनके बेटे को याद करके चिंतित-सी है। इस बात से वे थोड़ा प्रसन्न भी हुईं। पर वे बहू को देखकर कभी-कभी दुखी भी हो जाती थीं क्योंकि वह दिन-प्रतिदिन दुबली हुई जा रही थी। सजने-संवरने की भी उसे फिकर नहीं। एक दिन तो उन्होंने देखा कि उसने सोने की चूड़ियां भी उतारकर कांच की चूड़ियां पहन ली है। अंत में उन्होंने बहू को समझाना शुरू किया—"अरे पगली, नवीन जेल गया तो क्या हुआ, अरे बड़े-बड़े लोग जेल जाते हैं...। महात्मा गांधी की आवाज पर धरती उलट-पलट हो रही है...। एक साल तो यूं ही कल की तरह गुजर जाएगा। देखना, नवीन इस राज्य का राजा होकर आएगा..." आदि-आदि। पर वह मन ही मन समझ रही थी कि अपनी बातों से वे बहू का मन हल्का नहीं कर पा रही है।

28

एक दिन रामहरिबाबू नहाने जाने से पहले अपने शरीर पर तेल लगा रहे थे कि अचानक प्रकाश सामने आए और उन्हें नमस्कार किया। तेल लगाते समय किसी को नमस्कार नहीं किया जाता सो रामहरिबाबू थोड़ा गुस्सा हो गए थे। पर जब उन्होंने प्रकाश की ओर ध्यान से देखा तो जाना कि ये तो गांधीवादियों का कोई नेता है, इसे तो उचित सम्मान के साथ विदा करना होगा सो उन्होंने अपनी भंगिमा बदलकर उन्हें बैठने को कहा। जब प्रकाश ने बताया कि वे कटक के स्वराज आश्रम से आए हैं तथा यहां कुछ दिन रहना चाहते हैं तो उनके कान खड़े हो गए थे। उन्होंने नवीन के बारे में पूछा। इसके बाद ख़ुद

झूठ-मूठ दुखी होने का नाटक करते हुए उन्होंने कहा कि, "यहां के लोग उसकी बातें न समझ पाए तभी तो वह कटक चला गया।" इसके बाद बातों का सिलसिला कैसे जारी रखा जाए वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे सो हड़बड़ करते हुए वे नहाने चले गए और नौकर को प्रकाश का ध्यान रखने के लिए कह गए।

जाह्नवी देवी को खबर मिल गई थी कि बेटे के पास से एक आदमी आया है। इसलिए वे दरवाजे की आड़ में खड़ी होकर रामहरिबाबू और प्रकाश की बातें सुन रही थीं। उन्होंने उसी आड़ से प्रकाश को देखा। उन्हें गुस्सा आ रहा था आखिर उनके पति नवीन के बारे में और कुछ क्यों नहीं पूछ रहे हैं। उसके कटक जाने का कारण भी उन्होंने कुछ भी क्यों बता दिया। प्रतिभा भी खिड़की की आड़ लेकर दोनों की बातें सुन रही थी। उसका भी मन हो रहा था कि उस आए मेहमान के पास जाकर अपने पति के बारे में और भी कुछ बातें जाने।

रामहरिबाबू के नहाकर आने के बाद प्रकाश ने एक ऐसी बात उन्हें कही कि उसे सुनकर रामहरिबाबू को थोड़ा अजीब-सा लगा। प्रकाश ने उनसे नवीन की पत्नी से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। रामहरिबाबू ने उसे टालते हुए कहा था कि वो कोई बहुत पढ़ी-लिखी लड़की नहीं है। इस पर प्रकाश ने कहा था कि इससे कुछ नहीं होता। नवीन जिस राह का राही है उसकी पत्नी को भी उसी राह का अनुसरण करना चाहिए। इस राह पर तो पढ़े-लिखे, अनपढ़, गांव-शहर क्या पुरुष क्या नारी सभी चल सकते हैं। इस पर रामहरिबाबू ने एक और बहाना बनाया कि नवीन की मां कुछ पुराने ख़यालों की औरत है। इसलिए वो राजी होगी कि नहीं, पता नहीं। पर प्रकाश के बार-बार अनुरोध करने पर उनसे पूछा गया तो उन्होंने कोई

आपत्ति नहीं उठाई। क्योंकि वास्तव में सास-बहू दोनों ही नवीन के विषय में जानना चाहती थीं। इसलिए वहां से लौटकर रामहरिबाबू को मजबूरन प्रकाश से कहना पड़ा था, वे लोग राजी नहीं हो रहे थे, मैंने ही जिद करके उन्हें राजी किया है। आप इस दरवाजे के पास चले आइए वे लोग वहीं अंदर बैठकर बातचीत करेंगी।''

कुछ समय तक धीरे-धीरे बातचीत होने के बाद संकोच धीरे-धीरे हट गया था। जाह्नवी देवी ने अपने बेटे के खाने-पीने, रहने-ओढ़ने आदि के बारे में बहुत सारे प्रश्न पूछे थे। प्रकाश उनका सरल और स्नेह से जवाब देता जा रहा था। पर प्रकाश दोनों में से किसी को भी ठीक से नहीं देख पा रहा था। अंत में उसने बड़ी कोमलता से कहा, ''मां मैं भी तो तुम्हारा बेटा हूं। जैसा नवीन है वैसा ही मैं भी हूं। मां-बेटा क्या यूं ओट में बैठकर बात करते हैं ? और फिर मैं तो यहां रहूंगा इसीलिए यहां आया हूं। जब तक नवीन जेल से नहीं आ जाता तब तक मैं यही रहूंगा, आपका बेटा बनकर...।'' जाह्नवी देवी प्रसन्नता से भर उठीं थीं कि उनका बेटा जेल से छूटकर घर आएगा। उन्होंने उसी बात को फिर एक बार प्रकाश से पूछा तो प्रकाश ने कहा था कि वह जेल से जरूर घर लौटेगा। वह खुद उसे घर लाएगा। इस तरह बात करते-करते दोनों के बीच एक संकोचविहीन आत्मीयता आ गई थी। जाह्नवी देवी ने प्रकाश से पूछा, ''बेटा तुम्हारा घर कहां है ?'' प्रकाश हंसकर कहने लगे थे, ''मां मेरा कोई घर नहीं है। मैं जहां रहता हूं, वहीं मेरा घर हो जाता है। इसलिए तो मैं तुम्हें मां कहकर पुकारता हूं।'' इस पर जाह्नवी देवी ने बड़े करुणा-विगलित स्वर में कहा था, ''बेटा तू यहीं रह। जब नवीन आ जाएगा तब तेरा मन हो तो चले जाना।''

प्रतिभा ध्यान से दोनों की बातें सुन रही थी। उसने जब सुना कि नवीन जेल से वापस घर आएंगे तो वह पुलकित हो उठी थी। पर अचानक उसके मन में आया—वो आएंगे तो मुझसे बात तो करेंगे ? मैं उनके लिए क्या करूंगी, जिससे वो मुझसे बात करेंगे ? पर यदि उन्होंने मुझे नहीं पूछा तो ? गहरी सांसें लेकर वह अपने उद्वेग को दबाने की कोशिश कर रही थी।

रामहरिबाबू भी दूर से उनकी बातें सुन रहे थे। जब उन्होंने सुना कि नवीन के आने तक यह आदमी उनके घर में रहेगा, तो उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने मन ही मन सोचा कि प्रकाश का यहां रहना, विपत्ति को आमंत्रण देना ही होगा।

29

रामहरिबाबू की अक्सर दोपहर के भोजन के समय ही अपनी स्त्री से बातचीत होती है। पर इधर कुछ दिन हुए वे दोपहर के भोजन के समय चुपचाप सिर नीचा करके भोजन कर, बाहर चले जाते हैं। एक दिन उन्होंने गला खंखारकर, जरा ऊंची आवाज करते हुए कहा, "आज पूरा एक महीना हो गया। मैंने अपनी जुबान बंद रखी थी, पर मैं देख रहा हूं कि अब मुंह खोलना ही पड़ेगा…।" वे सोच रहे थे कि वे जो भी कह रहे हैं उनकी पत्नी उसे जरूर खंबे की ओट में खड़ी होकर सुन रही होगी। पर उधर से कोई उत्तर न आता देख उन्होंने रसोइए को आवाज लगाई। वह जब सब्जी लेकर वहां हाजिर हुआ तो उन्होंने पूछा—"क्यों रे, मालकिन यहां नहीं है क्या ?" रसोइए ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर धीरे-से कहा, "नहीं मालिक, वे तो रसोईघर में हैं। प्रकाशबाबू वहां भोजन कर रहे हैं। वे वहीं बैठकर बातें कर रही हैं।"

यह बात सुनते ही रामहरिबाबू गुस्से से लाल हो गरज उठे, "अच्छा, वो रसोई में बैठकर खा रहा है ? घर क्या धर्मशाला हो गया है ?...." रसोइए ने जाह्नवी देवी को खबर दे दी थी। उन्होंने तुरंत आकर रामहरिबाबू से कहा, "क्या बके जा रहे हो जी ? आखिर बात क्या है ?" अब तो रामहरिबाबू और भी उत्तेजित हो उठे थे। बोले, "अब और क्या होना बाकी है ? जाति गई, धर्म गया और अब जमींदारी भी जानेवाली है। अरे शास्त्र कहते हैं अनजान आदमी को तो चबूतरे पर भी नहीं बिठाना चाहिए, किंतु हमारे घर तो वो दिनभर घुसा रहता है और तुम लोगों के साथ खुसुर-पुसुर करता रहता है। रसोई में खाता है। और यहां से जाकर नीच-जात के लोगों के मुहल्ले में घूमता रहता है। उस दिन एक आदमी ने आकर मुझे दंडवत किया तो उससे कहने लगा कि सिर किसी के आगे मत झुकाओ। हम सभी मनुष्य हैं, सब समान हैं...।" इतनी सारी बातें सुनने के बाद जाह्नवी देवी अंत में कुछ सख्त होकर बोलीं, "क्या-क्या कहे जा रहे हो जी ? अरे रसोई में बैठकर किसी ने खा लिया तो क्या रसोईघर को छूत लग गई ? और मुझे ये सब क्यों सुना रहे हो ? जाओ उसे ही क्यों नहीं कह देते ?" जाह्नवी देवी जानती थीं कि वे अपने मुंह से प्रकाशबाबू को कुछ नहीं कहेंगे। वे तो उसकी सब बातों में 'हूं', 'हां' करते हैं। इस पर रामहरिबाबू और भी गुस्से से बड़बड़ाकर थाली छोड़ बाहर चले गए।

30

धैर्य की भी कोई सीमा होती है। यदि यह सीमा पार हो जाए तो खुद को संभालना बहुत कठिन हो जाता है। कुछ दिन के

बाद एक ऐसी ही परिस्थिति का सामना करना पड़ा था रामहरिबाबू को। एक बार एक ग्रामीण व्यक्ति उनके पास आया था। वह उन्हें इस साल कर नहीं दे पाएगा। यह बात उसने रामहरिबाबू के पैरों पर गिरकर, विनती करते हुए नहीं कही थी जोकि गांव की एक प्रकार से परंपरा बन चुकी थी, बल्कि सीधे-सीधे ही खड़े होकर कह दी थी। इससे पहले किसी भी गांव वाले ने इतनी हिम्मत न की थी। इस पर रामहरिबाबू ने चिल्लाते हुए कहा—''बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है तू। अरे लगा तो इसे—'' तभी उनका एक आदमी आकर उसे थप्पड़-घूंसे मारने लग गया था। वह गांववाला 'बाप रे ओ मां' कह-कहकर चिल्लाने लगा था। आवाज सुनकर प्रकाशबाबू बाहर आ गए थे और उस गांववाले के पास खड़े हो गए थे। उन्हें देखकर तो जैसे उस गांववाले में न जाने कहां से बल आ गया। वह जोर-जोर से कहने लगा, ''आज मेरे बदन में ताकत नहीं है इसलिए मैं उलटकर तुम्हें मार नहीं पा रहा हूं। पर मैं हमेशा कमजोर नहीं रहूंगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मेरे बेटे, नाती, पोते सब इस मार का बदला लेंगे।'' इस पर रामहरिबाबू उस आदमी पर और जोर-जोर से गुस्सा करने लगे थे। उनका पाला हुआ वह आदमी और भी जोर-जोर से उसे पीटने लगा था। अभी तक प्रकाश को वहां खड़ा देखकर रामहरिबाबू के पाले हुए मुस्टंडे आदमी ने कहा, ''अरे साहब, जाइए। इस जमींदारी के मामलों में आप यहां क्या कर रहे हैं ?'' प्रकाश थोड़ा हंसकर बोले, ''मैं यहां खड़ा होकर देख रहा हूं कि एक इंसान की जान कितनी आसानी से जा सकती है।'' तभी रामहरिबाबू और भी चिढ़कर अपनी जगह से उठकर प्रकाशबाबू से बोले, ''आप यहां से चले जाइए। हमारा यह अंचल पहले बहुत अच्छा था आपने ही आकर इन मूर्खों को न जाने क्या-क्या सिखाकर इस अंचल

को खराब कर दिया है।'' प्रकाश कुछ समय तक चुपचाप खड़े रहे फिर रामहरिबाबू की ओर घूरकर तेज कदमों से अंदर चले गए। वहां खड़े हुए लोगों को रामहरिबाबू बता रहे थे कि यह आदमी जो अभी-अभी अंदर गया है उसे खाने को नहीं मिलता था इसलिए खाने के लिए ये मेरे घर में पड़ा है 'धर्म-बेटा' बनकर।

कुछ समय के बाद उनके पाले हुए मुस्टंडे ने उनके कान में धीरे-धीरे न जाने क्या कहा। रामहरिबाबू ने कुछ समय तक न जाने क्या सोचा, फिर उसके कान में उन्होंने भी धीरे-धीरे कुछ कहा। उसके बाद अचानक वे उठकर अंदर चले गए।

31

घर के अंदर की ओर बने बरामदे में जाह्नवी देवी और प्रकाश बैठकर बातें कर रहे थे। रामहरिबाबू वहीं जाकर खड़े हो गए और गंभीर स्वर में बोले, ''देखो प्रकाशबाबू मैंने तुम्हें बहुत दिन तक यहां रहने दिया है, पर अब तुम सीधे यहां से चले जाओ वरना···।'' प्रकाश तुरंत उठकर बोले, ''मेरा क्या है, मैं तो अभी यहां से चला जाऊंगा यदि मांजी आज्ञा दें तो। आप ही इनसे कहकर मुझे आज्ञा दिलवा दीजिए, मैं चला जाऊंगा।'' इतना कहकर वे बाहर चले गए।

जाह्नवी देवी चिंतित-सी नीचे की ओर देखे जा रही थीं। अब रामहरिबाबू वहीं बैठकर उन्हें समझाने लगे थे कि यह जमींदार का घर है और जमींदारी बचाए रखने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। इसलिए बाहर के आदमी का यहां हमेशा रहना अच्छा नहीं है। जाह्नवी देवी ने कुछ समय चुप रहकर

कहा, "नवीन के आने को और दो ही महीने तो रह गए हैं। नवीन आ जाए तो ये चला जाएगा, नहीं तो इससे मुझे क्या पड़ी है ? नवीन के लिए ही मैंने इसे रखा है। इसके चले जाने के बाद यदि नवीन नहीं आया तो ?" रामहरिबाबू बोले कि नवीन के आने में कोई संदेह नहीं है वे खुद जाकर उसे ले आएंगे। पर जाह्नवी देवी का मन नहीं माना। वे ना की मुद्रा में सिर हिलाने लगी थीं। इस पर रामहरिबाबू के धैर्य का बांध टूट गया। वे खड़े होकर गुस्से से कहने लगे थे, "अच्छा ! ठीक है, मैं देखता हूं वो कैसे यहां रहता है।" इतना कह वे बाहर चले गए।

जाह्नवी देवी ने देखा कि प्रतिभा उन दोनों की बात सुन रही है। सो उन्होंने उससे पूछा, "अब तू ही बता बहू ! क्या वह यहां से चला जाए ?" पर प्रतिभा चुप रही। अब जाह्नवी देवी के दिमाग में आने लगा था कि वास्तव में प्रकाश जो कहता है कि जमींदारी प्रथा ठीक नहीं है, भगवान की पूजा की क्या आवश्यकता, लोग ही तो भगवान हैं, उन्हीं की सेवा करना ही धर्म है, ये बातें कभी-कभी उन्हें भी पसंद नहीं आती थीं। पर नवीन के लिए तो उसे अटकाना जरूरी था। यदि वो कुछ दिन और रुक जाए तो हमारा क्या नुकसान हो जाएगा ? न जाने कब आएगा नवीन' ऐसे बड़बड़ाते हुए उनका गला रुंध गया था। इधर प्रतिभा की आंखें भी छलछला आई थीं। उसी समय नौकर ने आकर डरते-डरते बताया, "बाहर जमींदार साहब बोल रहे थे कि अब प्रकाश बाबू घर के अंदर नहीं आ सकते हैं।" जाह्नवी देवी ने चिढ़कर बड़बड़ाते हुए कहा, "हां रहने दो, घर में रहने से कौन सा पहाड़ टूटे जा रहा था ?"

32

प्रकाश जब भी जाह्नवी देवी से बातें करते तो प्रतिभा भी वहीं बैठकर सुनती रहती। वह भी कभी बीच-बीच में बोलती। प्रकाश की हर बात को वह आत्मसात करने की कोशिश करती। वह समझ रही थी कि उसके पति जो भी चाहते हैं वही बातें प्रकाश बताते हैं।

एक बार प्रकाश ने गरीब और अमीरों के बीच के अंतर को बताया कि यह भेदभाव इतना भयंकर है कि गरीबी के कारण मां अपनी बेटी को लाड़ करने का समय नहीं निकाल पाती और पैसे के लिए अपने गांव के बाहर गया आदमी साल में कभी-कभी एक बार भी अपनी पत्नी का मुंह नहीं देख पाता। जाह्नवी देवी ने इस बात को कर्मफल कहकर उड़ा दिया था। पर प्रतिभा को अपने मैके की याद आ रही थी। उसे याद आ रहा था कि कैसे उसके मां-बाप उसके ब्याह से सुखी रहने का मार्ग खोज रहे थे। उसकी मां काम करके कितना थक जाती है पर उसकी मदद करनेवाला कोई नहीं है। उसे यह भी याद आया कि सिद्धेश्वर यहां एक बार आकर कितना अपमानित हुआ है उसके ससुर से। उस समय वह सोच रही थी कि शायद वह गलत समझ रही है, पर आज उसे असली बात समझ में आ गई थी। बड़े लोगों का गरीबों के प्रति अनादर भाव जानकर उसे गुस्सा आ रहा था। प्रकाश ने एक बार बताया था कि यहां पर स्त्रियों के साथ जो व्यवहार किया जाता है, वह सरासर गलत है। आदमी, औरत को अपनी जायदाद समझकर घर के अंदर संभाल कर रखता है इसलिए वे बाहर की दुनिया के विषय में कुछ जान नहीं पाती हैं। पति और पत्नी के बीच केवल संतान उत्पन्न करने तक ही संबंध रह गया है। जाह्नवी

देवी ने हंसी में बात को टाल दिया था। वे बोली थीं कि यह सब तो भगवान का ही बनाया हुआ है। पर प्रतिभा को उस रात की याद हो आई थी कि जब वह अपने पति के सामने उसकी कृपा की प्रार्थी बनकर गई थी पर उसके पति ने एक हाकिम की तरह उसकी दरखास्त नामंजूर कर दी थी। इतनी अवज्ञा। अब उसकी समझ में आ रहा था कि इसका मूल कारण यही है कि औरत अपना महत्व खुद ही नहीं समझती।

और एक बार जाह्नवी देवी के बार-बार नवीन के बारे में पूछने पर प्रकाश ने समझाया था कि जहां भी अत्याचार होता है, वहां जाकर अत्याचार भोगनेवाले लोगों की मदद करना और उन्हें अत्याचार के विरूद्ध खड़ा करना यही क्रांतिकारियों के काम हैं। और इस काम के लिए जो भी दुख-कष्ट सहने पड़ते हैं उसकी उसे कोई परवाह नहीं है। परवाह न करने पर दुख महसूस ही नहीं होता है, वह छोटा हो जाता है। इसलिए वे सोच सकते हैं कि नवीन बहुत खुश है। यह बात प्रतिभा को इतनी भा गई कि वह भी मन ही मन सोचने लगी कि काश उसे भी अपना जीवन किसी महत्वपूर्ण कार्य में लगाने का अवसर मिला होता।

अब तो धीरे-धीरे महेंद्रबाबू के प्रति उसका आदर कम होने लगा था। उनके कुछ लेख पढ़कर तो उसके मन में अब घृणा भी जागने लगी थी।

प्रकाश की बातें सुनकर वह इतना मग्न रहने लगी थी कि प्रकाश के प्रति रामहरिबाबू की चिढ़चिढ़ाहट का भी उस पर कोई असर नहीं होता था। उसका मन तो बार-बार यही होता था कि प्रकाशबाबू और कुछ दिन यहां रह जाएं।

33

उस दिन की घटना के बाद रामहरिबाबू ने थाने में खबर भेजी थी कि एक बाहर का आदमी सरकार विरोधी बातें कर लोगों को भरमा रहा है। इससे आगे चलकर भयंकर दंगा-फसाद होने की संभावना है। इधर उन्होंने प्रकाशबाबू को भी चेतावनी दे दी थी कि यदि वो तुरंत नहीं चले जाते तो वे उन्हें पुलिस से पकड़वा देंगे। उनकी धमकी को सुन प्रकाशबाबू हंस पड़े थे, बोले, "मैं क्या पुलिस से डरता हूं ?" इस बात को सुन रामहरिबाबू थोड़ा दब गए थे पर फिर कुछ समय तक न जाने क्या सोचकर अंदर आए और गुस्से से तमतमाकर बोले, "उस आदमी से कह दो कि यहां से तुरंत चला जाए नहीं तो थोड़ी देर में ही पुलिस उसे बांधकर ले जाएगी। फिर मुझे दोष मत देना।" उस समय जाह्नवी देवी और प्रतिभा आपस में बैठकर बातें कर रही थीं। दोनों ने विस्मित होकर एक दूसरे को देखा। अंत में प्रतिभा ने गहरी सांस लेकर कहा, "वे चले जाएं तो अच्छा है। हमारे घर रहकर आखिर उनका इतना अपमान क्यों हो ?" जाह्नवी देवी ने भी मजबूर होकर प्रतिभा की बात मान ली थी। उन्होंने नौकर को बुलाया और उसके हाथ प्रकाश को खबर भिजवाई कि वह चला जाए।

रामहरिबाबू अपने कार्यालय में बैठकर अदायगी का हिसाब-किताब कर रहे थे कि तभी प्रकाश उनसे विदाई लेने वहां पहुंचे। रामहरिबाबू ने कुछ व्यस्तता दिखाते हुए कहा, "अच्छा तो आप जा रहे हैं ? ठीक है जाइए। कुछ ख़राब मत सोचिएगा। ये मूर्ख अंचल···" तभी प्रकाश उनकी तरफ उंगुली दिखाकर जोर से बोलने लगे थे, "इन लोगों को मूर्ख आप कहते हैं क्योंकि इन्हें अभी अपनी शक्ति का पता नहीं है। ये लोग

आपके वैभव और पुलिस की लाल पगड़ी से डर जाते हैं। पर याद रखिए जिस दिन इनका यह डर चला जाएगा उसी दिन ये लोग देश चलाने लग जाएंगे। तब इन्हीं लोगों की कृपा पर आपका यह वैभव टिकेगा। ठीक है मैं जा रहा हूं पर मै सदा इन मासूम और दुखी लोगों के मन में रहूंगा। प्रत्यक्ष में हो या परोक्ष में आप सदा मुझे याद रखेंगे।''

प्रकाश के जाने के बाद ही अचानक रामहरिबाबू के कार्यालय में एक अफवाह उड़ने लगी थी कि शायद किसी ने किसी को मार दिया है। बाद में रामहरिबाबू को पता चला कि जो आदमी मार खाने से मर गया था और जिसे उन्होंने तुरंत जलाने का हुकुम दिया था उसे जलाया नहीं गया था। जिस आदमी को उन्होंने यह काम सौंपा था वह कहीं चला गया था। भय और क्रोध के भाव बारी-बारी उनके चेहरे पर आ-जा रहे थे। अब उनके मन में बार-बार यह विचार आ रहा था कि प्रकाशबाबू को इस तरह निकालकर उन्होंने भूल की।

34

चारों ओर चर्चा फैल चुकी थी कि रामहरिबाबू ने एक आदमी को मार डाला। इधर रामहरिबाबू ने थाने के मुंशी से लेकर पुलिस तक सभी को अपने हाथ में कर लिया था। लाश को मुआयने के लिए भेज दिया था। डॉक्टर ने भी रिपोर्ट दे दी थी कि वह आदमी वात और कफ के कारण मरा है। पर जनता की आवाज को पैसे के बल पर दबाया न जा सका। अब वह आवाज इतनी भयंकर हो चुकी थी कि लोगों ने जमींदार के गुमास्तों आदि का पानी पीना तक हराम कर दिया। थाने के

मुंशी रामहरिबाबू की सुरक्षा के लिए बराबर उनके पास ही रहने लगे। इसके अलावा रामहरिबाबू ने अपने खर्च से पांच बंदूकधारी सिपाहियों को अपने घर के बाहर खड़ा कर रखा था। उन्होंने खुद भी कहीं बाहर जाना बंद कर दिया था।

इन हालातों में जाह्नवी देवी बहुत दुखी हो गई थीं। प्रतिभा नौकरों से सभी छोटी-मोटी खबरें लेती रहती थी। नौकरों की सहानुभूति लोगों के साथ थी। नौकरों को यह अनुभव हो चुका था कि छोटी मालकिन जनता के साथ ही है। जनता को पता था कि नवीन लोगों के अधिकारों के लिए जेल गए हैं। नौकरों के जरिए से उन्हें मालूम चल गया था कि नवीन की पत्नी उन्हीं के साथ है। बात उड़ते-उड़ते रामहरि के कानों में पहुंच गई थी। वैसे उन्हें अपनी बहू पर कोई संदेह न था पर फिर भी उन्होंने जाह्नवी देवी को कहा, "एक मजे की बात जानती हो ना ? ये लफंगे लोग कह रहे हैं कि हमारी बहू उन लोगों के साथ है···" जाह्नवी देवी ने इसका जोरदार प्रतिवाद किया, बोलीं, "कौन कहता है जी ! हमारी बहू तो किसी के आगे जबान तक नहीं खोलती।" बाद में प्रतिभा ने अपनी सास से पूछा था, "मांजी आप मेरे विषय में क्या कह रही थीं, जाह्नवी देवी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा कि छोड़ो लोग तो कहते ही हैं। जो उनके मन में आता है उसके लिए चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।" पर प्रतिभा ने सिर झुकाकर दृढ़ स्वर में कहा, "लोग जो कह रहे हैं वह सच है माँजी। एक आदमी को पीटते-पीटते उसकी जान ही ले ली। इस पर लोग क्या नहीं भड़केंगे ? और फिर उस पर पुलिस भी उन पर अत्याचार करना शुरू कर दे तो अनाचार की सीमा ही नहीं रहेगी। यही सब तो रोकने के लिए कितने ही लोग जेल गए हैं। जेल से लौटकर वे क्या कहेंगे···?"

जाह्नवी देवी को नवीन की याद आ गई थी। वे बड़े दुखी मन से बोली थीं, "अब तू ही बता बहू भगवान को इसी समय यह लीला करनी थी कि यह झमेला खड़ा हो जबकि मेरा बेटा लौटनेवाला है ? वह सच में लौटेगा तो ?"

35

सूर्य की किरणें यदि लैंस द्वारा केंद्रित हो जाएं तो आग भी लगा सकती हैं। इसी तरह छोटी-सी जेल के अंदर मनुष्य अपने अंदर छुपे न जाने कितने भावों से परिचित हो पाता है जोकि बाहर की दुनिया में रहकर जान नहीं पाता है। यहां नवीन के मन में कभी-कभी ऐसे-ऐसे भाव उठ आते थे कि वह स्वयं ही अचंभित हो जाता था।

वसंत आ गया है। जेल की चारदीवारी के अंदर स्थित सारे वृक्ष नए-नए पत्तों से सज गए हैं। उन्हें देख ऐसा लगता है जैसे वे कैदियों को चिढ़ा रहे हों। चीं-चीं करती हुई चिड़ियां भी उन्हें ऐसी लग रही थीं जैसे उन पर हंस रही हों और कह रही हों कि तुम लोग तो सब बंदी हो, देखो ! हम सब कैसे स्वतंत्र हैं। ऐसा वातावरण पा न जाने कैसे नवीन के अंदर का सोया प्यार जाग उठा। उन्हें लगा जैसे वे किसी को पूर्ण समर्पण कर दें और कोई भी उनके पास पूर्ण समर्पित हो जाए। तब उन्हें याद आया कि जब कन्यादान के समय प्रतिभा का हाथ उनके हाथ में सौंप दिया गया था तो कैसी एक अनिवर्चनीय सिहरन उन्होंने अनुभव की थी। इसके बाद भी घर पर उन्होंने इस सिहरन को न जाने कितनी बार अनुभव किया था, जिसे वे यूं ही दबा गए थे। पर क्यों ? क्या प्रतिभा प्रेम योग्य न थी ? बेचारी का क्या दोष था ? न जाने कितने सपने सजाकर

वह अपनी आशाओं की नन्हीं-सी नौका लेकर उनके पास आई थी, उसे पार लगा देने के लिए, पर उन्होंने उसे क्यों लौटा दिया ? कितनी तकलीफ हुई होगी उसके मन को ? देश के लिए उनका जितना कर्त्तव्य है उसके प्रति भी तो उतना ही है। और यदि वे कोशिश करते तो प्रतिभा को भी तो अपनी राह चला सकते थे।

वहीं पर उन्होंने निर्णय किया कि जेल से निकलने के बाद वे कुछ दिनों के लिए घर जाएंगे। माता-पिता को सारी बातें समझाएंगे और प्रतिभा से भी दिल से माफी मांग लेंगे। यदि वो मान करके बात नहीं करेगी तो वे उसके मान को सह लेंगे क्योंकि गलती तो उन्हीं की है न···।''

'पर मैं छूटूंगा कब ? अभी तो और तीन महीने बाकी हैं !' उन्होंने गहरी सांस लेकर अपनी चिंता कम करने की कोशिश की। पर वसंत ऋतु उन्हें विश्राम करने दे तब न ?

36

क्रांति को दबाने के लिए सरकार ने जिस दमन-नीति का सहारा लिया था उसके चलते सौ-सौ लोगों को जेल जाना पड़ा था। लोग जमींदार के अत्याचारों से बचने के लिए जब सरकार का सहारा लेते थे तो सरकार के बंदूकधारी सैनिक उन्हें दबाने के लिए उनके घर जला देते थे, कितनों को गोली मार देते थे और अनेकों को जेल में ठूंस देते थे। इस तरह से चारों ओर से अनगिनत क्रांतिकारी आकर कटक की जेल में भरे थे।

नवीन अब चोर और डाकुओं के साथ न थे। उन्हें अब उनकी ही श्रेणी के लोगों के बीच रखा गया था। नवीन उन लोगों के मन में शौर्य और साहस हमेशा बनाए रखने की

कोशिश किया करते थे। पर कभी-कभी उनका मन अंदर ही अंदर टूटने लगता था। कब तक चलेगा यह अत्याचार ? क्या इसका अंत नहीं है ? फिर वे अपने मन की हताशा को झटककर साहस का पल्ला पकड़ लेते थे।

वे सोच रहे थे—जेल से छूटते ही मैं सभी भागों में जाऊंगा, जो अत्याचार के शिकार हुए हैं वहां के लोगों में फिर साहस भर उन्हें उसके विरूद्ध खड़ा करूंगा। इसके बदले में चाहे मुझे जेल होनी हो तो हो जाए। अत्याचार के आगे सिर झुकाने से तो आजीवन कारावास भला। इस तरह सोचते-सोचते अचानक दूसरा विचार उनके मन में आया कि तो क्या वसंत ऋतु का मान बेकार हो जाएगा ? मैंने जिसका हाथ थामा था वो क्या जीवन भर गहरी सांसों के सहारे ही जिएगी ?

बीच-बीच में प्रकाश की बातें उन्हें याद आ जातीं। उन्हें तो उसने कभी भी चिंतित या विचलित नहीं देखा। क्रांतिकारी के अंदर जितनी दया, जितना धैर्य और जिन-जिन गुणों की जरूरत होती है वे सब प्रकाश के अंदर थे। वे मन ही मन सोचते क्यों मैं प्रकाश जैसा नहीं बन सकता ? उनकी भाषा में मैं क्या पावर-हाउस नहीं हो सकता, जिससे कि विद्युत निकलकर औरों को प्रभावित कर पाती ? नहीं पर उनकी तरह होने के लिए घर की ममता पूरी तरह छोड़नी होगी···। जेल में ऐसे ही अनेक भाव नवीन के मन में आते जाते रहते थे पर वह यह समझ नहीं पाते थे कि वे कौन-सी विचार-धारा में ही बहते रहे।

37

जेल से छूटने का दिन जैसे-जैसे पास आता जा रहा था। नवीन

के मन में उद्वेग उतना ही ज्यादा बढ़ा जा रहा था। अभी और भी पंद्रह दिन बाकी हैं। ओफ्फ् इतने दिन कैसे कटेंगे। और फिर धीरे-धीरे चौदह, तेरह बारह और ऐसे करते-करते अंतिम दिन भी आ पहुंचा। जितनी खुशी उन्हें उस उन्मुक्त जीवन की कल्पना दे रही थी उतनी ही चिंता उन्हें उन दायित्वों को निभाने की हो रही थी जो उन्हें बाहर जाकर निभाने थे।

आज नवीन को सब घेर कर बैठे हैं। वो उन सबको छोड़कर चला जाएगा। यह सोचकर सभी दुखी हो रहे हैं और उनमें से कुछ की आंखें भी भर आई हैं। उन सबको देखकर नवीन भी दुखी हो रहे थे। उन्हें छोड़ जाने का उन्हें भी गम था। कुछ भी हो, फिर भी नवीन उन्हें सांत्वना दे रहे थे। सभी उन्हें अपने-अपने पते-ठिकानों के बारे में बता रहे थे ताकि नवीन वहां जाकर खबर दे सकें। चूंकि वहां कागज आदि की कोई सुविधा न थी सो नवीन उनकी बातों को याद रखने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहे थे। उन्हें यह विश्वास दिला रहे थे कि वे स्वयं उनके घरों में जाकर उनके परिवारजनों की खबर लेंगे और उन सबकी बातें भी बताएंगे। तभी उन्हें बीच में अपने परिवार की भी याद हो आई थी। वे सोच रहे थे कि मेरे इस आंदोलन में भाग लेने से मेरे परिवार की तो कोई आर्थिक-क्षति नहीं हुई है पर इनमें से न जाने कितने लोगों के परिवार भूख-उपवास में सोए होंगे। पर मेरा तो बल्कि नाम ही हुआ है इस आंदोलन से। वे मन ही मन सोच रहे थे कि इतिहास भी तो सेनापतियों के ही गुण गाता है पर साधारण सैनिकों को कौन याद रखता है जबकि उन्हीं के त्याग और क्रांति के लिए पागलपन की हद तक काम करने से ही विजय निश्चित होती है।

38

जेल से बाहर आते ही नवीन की नजरें प्रकाश के ऊपर पड़ीं। उन्होंने देखा कि वे मुस्कराते हुए उन्हीं की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। नवीन भी उन की तरफ दौड़ गए और उन्हें जोर से गले लगा लिया। भावावेश में नवीन की आंखें भर आई थीं। प्रकाश बोले, "हां नवीन मैं तुम्हारा बेसब्री से इंतजार कर रहा था। तुम्हें बहुत सारी अच्छी और कुछ बुरी खबरें भी देनी हैं।" दोनों बात करते-करते आश्रम की ओर चल पड़े थे। खूब गहरी नींद में अचानक बुरा सपना देखकर कोई हड़बड़ा कर उठ बैठे ठीक वैसा ही नवीन को लग रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे सब कुछ वैसा का वैसा ही हो। नयासड़क चौक पर उसी बरगद के पेड़ के नीचे वैसे ही बांस की डालियों की खरीद-बिक्री चल रही थी। सड़क पर तांगे, साइकिल आदि वैसे के वैसे चल रहे थे। पर फिर भी आज उन्हें कुछ नया-नया-सा लग रहा था।

प्रकाश गंभीर होकर बोले, "पिछले साल के अंदर क्या-क्या बदला है पहले तुम उसे जान लो।" अब उन्होंने बताना शुरू किया कि वे उनके घर गए थे। वहां वे कुछ दिन रहे थे। अब वे नवीन की विस्मित और जिज्ञासु नजरों को देखकर थोड़ा हंस पड़े थे और बोले, "तुम्हारी मां ने मुझे बहुत प्यार किया।" नवीन अब और भी आश्चर्यचकित हो गए थे। अरे ये घर के भीतर घुसे कैसे ? मां से मिले कैसे ? और जब प्रकाश ने बताया कि प्रतिभा के अंदर वास्तविक प्रतिभा छुपी हुई है तो वे रोमांचित हो उठे। फिर प्रकाश बोले, "प्रतिभा जी ने मुझे एक पत्र लिखा है पर वास्तव में वह तुम्हारे लिए है।" 'अँय ? क्या मैं सपना देख रहा हूं ?' नवीन के विस्मय की कोई सीमा न थी। जहां पर्दा-प्रथा का शासन हो वहां प्रकाश

का प्रवेश और फिर पत्र-व्यवहार ! बात क्या है ? नवीन की बालबुद्धि भरी बात को सुनकर प्रकाश बोले, "इसमें आश्चर्यचकित होने की कोई बात नहीं है। एक साल कोई कम नहीं होता और फिर यह तो क्रांति का समय है !"

आश्रम में पहुंचकर नवीन को आश्रम बड़ा श्रीहीन-सा लगा। न ही लोगों की चहल-पहल और न ही उत्साह भरा वातावरण। चारों ओर कुछ वीरानी-सी। नवीन ने बहुत ही उद्वेग से पूछा, "देश की क्या हालत है ?" प्रकाश बोले, "यह आश्रम भी तो एक देश का ही प्रतिबिंब है। आज जो आश्रम की हालत है वही देश की है।" अब उन्होंने नवीन की हताशा को भांपा और बोलने लगे, "क्यों नवीन दुखी हो गए हो ? इस समय तुम्हारी जयजयकार कर, तुमसे क्रांति की दीक्षा लेनेवाला यहां कोई नहीं है। इस समय तुम्हारी ओर हो सकता है कि कोई नजरें उठाकर भी न देखे। पर जानते हो यह भी एक स्थिति है। इस समय यदि तुम हिम्मत रख सको तो यह तुम्हारी बहादुरी होगी।"

उनकी बात सुनकर नवीन को आश्चर्य लगा। बाहर आने का सुख इस तरह हवा बन जाएगा, यह तो उन्होंने सोचा भी न था। चलो फिर भी अब वे मुक्त हैं यही सोचकर वे प्रसन्न थे।

39

प्रकाश ने नवीन के हाथ में पत्र पकड़ा कर "मुझे काम है" कहा और बाहर चले गए। नवीन ने चिट्ठी लेकर बार-बार पढ़ी पर फिर भी उसका जी न भरा। तभी आश्रम के बचे-खुचे लोग उसे घेरकर बैठ गए थे। नवीन पत्र बंद कर उनसे हंस-हंसकर उनके हालचाल पूछने लगे थे। तभी उनकी नजर पुरंदर नामक

स्वयंसेवक पर पड़ी। वह जब पढ़ाई छोड़कर यहां आया था तो उसके पिता ने उसे कितना मारा था। यहां तक कि मारते-मारते उसकी पीठ पर ही उनका छाता टूट गया था। फिर भी वो छिपते-छिपाते यहां आश्रम में आ गया था। नवीन ने उसके

हालचाल पूछे तो वह बोला, "सुना है मेरे पिता ने मुझे अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया है पर देश को मुक्त कराने का संकल्प लेकर आया हूं अब लौटूंगा नहीं।" कितना त्याग ! सोचते ही रह गए नवीन।

फिर नवीन ने देश के विषय में जो सुना उससे उनका खून खौल उठा। उन्होंने ऐसे अत्याचार की तो कभी कल्पना भी न की थी। कहीं पर पुलिस की लाठियों से एक बुढ़िया का सिर फट गया तो कहीं आबकारी नीलाम के समय पिकेटिंग कर रहे स्वयंसेवकों को तंग किया गया, अपमानित किया गया ! और कहीं पति को बांधकर उसके सामने ही उसकी पत्नी से बलात्कार किया गया। सभी कह रहे थे कि यह सच है कि लोग अत्याचारों से भयभीत हो दब गए हैं पर यदि उन्हें फिर से साहस दिया जाए, शौर्य की भावनाएं जगाई जाएं तो एक बार फिर वे अत्याचारों के विरूद्ध हुंकार भर सकते हैं। पर दुख की बात तो यह थी कि जो लोग दूसरों में शौर्य जगा रहे थे वे स्वयं ही डरे हुए थे।

कुछ समय के बाद सब अपने-अपने काम से चले गए थे। नवीन फिर से चिट्ठी पढ़ने बैठ गए। वे बहुत चिंतित थे। वे सोच रहे थे कि जिस क्रांति ने सफलता की निश्चितता का वचन दिया था वह आज टूटती दिखाई पड़ रही है। पर उस वचन की रक्षा का दायित्व भी आज उन्हीं लोगों पर है जो क्रांति की आवाज सुन दौड़ पड़े थे। वे स्वयं को चेता रहे थे—अरे मैं तो कहता था कि मैं पूर्णतः बंधनहीन हूं। मैं पूर्ण समयदानी की तरह क्रांति के लिए काम करूंगा। पर आज घर की ओर मैं क्यों खिंचा जा रहा हूं। सारी आस और सारे संपर्कों को छोड़कर देश के लिए प्राण दे देने से ही तो देश स्वाधीन हो पाएगा।

40

नवीन रात को लेटे-लेटे अपने कर्त्तव्य के संबंध में सोच रहे थे। अचानक उन्होंने लालटेन को अपने पास खींचकर प्रतिभा की चिट्ठी पढ़नी शुरू कर दी थी। उसने प्रकाश को लिखा था—

"....यदि वे सोचते हैं कि विवाह उनकी इच्छा से नहीं हुआ इसलिए वे विवाहित जीवन के उत्तरदायित्वों को वहन नहीं कर रहे हैं तो मैं भी ऐसा कह सकती हूं कि इस विवाह में मेरा भी कोई हाथ नहीं है। मैं भी तो इस दायित्व से मुक्त हो सकती हूं। वे यदि मुझे अपने लिए उपयुक्त नहीं मानते तो मैं भी उन्हें अपने लिए उपयुक्त नहीं मान सकती हूं—मेरा भी यह अधिकार है। यदि वे अपने को बड़ा क्रांतिकारी कहकर मेरी उपेक्षा कर सकते हैं तो मैं भी अपने को बड़ी क्रांतिकारिणी कहकर सारे संसार की उपेक्षा कर सकती हूं। आपकी प्रेरणा से मैं अब पहले वाली अबला नारी नहीं हूं जो हर समय पुरुष के आगे हाथ जोड़कर खड़ी रहती है। क्रांति का पथ मेरे लिए भी खुला है। आज यदि यहां की जनता जमींदार के विरोध में खड़े होने के लिए मुझे सहायक मानती है तो मैं राजी क्यों न हूंगी ? मैं भी घर-संसार छोड़ दूंगी। अपने जीवन को मैं भी इस विशाल नदी में फेंक दूंगी। मुझे भी तैरने का साहस है। उतराते हुए हो या तैरते हुए मैं भी समुद्र की ओर जाऊंगी। यदि डूब भी जाऊंगी तो मुझे चिंता नहीं है। क्योंकि मैं भी तो दुनिया में अकेली हूं। मेरा कोई नहीं...।"

प्रतिभा ऐसी चिट्ठी लिख सकती है ? क्रांति का ऐसा चित्र आंक सकती है ? यदि उसकी खुद की प्रतिभा न होती तो क्या प्रकाश कुछ ही दिनों में प्रेरणा देकर उसे बदल पाते ! इतनी गुणवान पत्नी का वे निरादर करते आए हैं यह दुख उन्हें सता

रहा था। पर अपने ही ससुर के विरूद्ध जनता से मिल वह नेत्री बनेगी यह सोचते ही वे भय से सिहर उठे थे। क्रांति के पथ पर चलने के लिए उन्हें अपने माता-पिता को छोड़ना होगा। सारी धन-संपत्ति को छोड़ना होगा। यह सोचकर वे चिंतित हो गए थे। अब तो उनका मन प्रकाश को दोष देने से भी पीछे नहीं हटा था। सोच रहे थे कि कॉलेज के समय प्रकाश ने उन्हें कुछ सोचने भी नहीं दिया। उन्हें इस प्रकार विचारों से उत्तेजित करता रहा कि वे इस आंदोलन में कूद पड़े। प्रकाश ने ही उन्हें टूटी नाव में बिठाकर समुद्र में छोड़ दिया है।

41

बिस्तर पर सोचते-सोचते न जाने कब उनकी आंख लग गई थी। आधी नींद में उन्होंने एक अजीब सपना देखा। उन्होंने देखा कि काठजोड़ी नदी में बाढ़ आ गई है। वह भयंकर उफान पर है। उसने दोनों किनारे तोड़ दिए हैं। उसी उफनती हुई नदी के बीच एक लकड़ी तैर रही है। तभी उन्हें कहीं से संगीत का स्वर सुनाई दिया। "मेरी अकेली जीवन नौका, नहीं है मेरा कोई खिवैया।" अरे यह तो प्रतिभा की आवाज है। तभी उस लकड़ी ने मनुष्य का आकार ले लिया। वह गीत गाने लगी थी। वह रो-रोकर गीत गा रही थी। किनारे पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। लोग चिल्ला रहे थे, "अरे बह गई, बह गई !" वे नदी में कूदने ही वाले थे प्रतिभा को बचाने के लिए पर तभी प्रकाश ने उन्हें आकर पीछे से पकड़ लिया था। प्रकाश उसे हंस-हंसकर बड़े ही निष्ठुर ढंग से कह रहे है—"नवीन, कहां जा रहे हो ? डूबने दो उसे !" नवीन उन्हें धक्का देकर नदी में कूद पड़े। तभी उनकी नींद खुल गई। उनका दिल धड़क रहा था। उन्होंने

चारों तरफ देखा। कोई भी नहीं था बस पास में लालटेन जल रही है और पास ही प्रतिभा की चिट्ठी रखी है।

इस सपने के बाद वे स्वयं को अपराधी समझ रहे थे। फिर वे सोचने लगे कि प्रतिभा को साथ रखें मगर वे काम कैसे करेंगे। तभी उनके दिमाग में एक उपाय आया। वे सोचने लगे कि जिस क्रांति के प्रचार-प्रसार में वे लगे हैं वही क्रांति तो उनके गांव तक भी पहुंच गई है, तभी तो वहां के लोग अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठा रहे हैं। तो कितना अच्छा होता यदि वे अपनी जमींदारी अच्छी तरह संभाल लेते। इससे लोगों की भलाई होगी, माता-पिता खुश होंगे और प्रतिभा भी अकेली नहीं रहेगी। पर बाद में एक प्रश्न उनके मन को कचोटने लगा—तो क्या मैं एक भला जमींदार होकर अपने गांव में रहूंगा और वैसे ही मेरा जीवन खत्म हो जाएगा ? पर आज तक उनके साथ जो इतने क्रांतिकारियों ने काम किया और अत्याचार भोगे वे उनको क्या मुंह दिखाएंगे ? उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।

42

प्रतिभा ने प्रकाश के नाम जो पत्र लिखा था वह जाह्नवी देवी के कहने और उसे उत्तेजित कर देने पर ही लिखा गया था पर उसने कुछ रूप बदल दिया था पत्र का। जैसे-जैसे लोगों का क्रोध बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे रामहरिबाबू बात-बात पर असहयोग आंदोलन, प्रकाश और नवीन को गालियां देने लगते थे। एक दिन जब जाह्नवी देवी ने कहा कि लोगों को कहो कि बेटे के लौटने तक थोड़ा धैर्य रखें तो रामहरिबाबू और भी आगबबूला हो अपने बेटे पर चिल्ला पड़े थे—“वह भी क्या

इंसान है ?''

एक दिन जाह्नवी देवी प्रतिभा के पीछे ही पड़ गई थीं कि वह नवीन को पत्र लिखे। क्योंकि वे रामहरिबाबू की गतिविधियों को देख रही थीं। और इन परिस्थितियों में नवीन का लौटना इतना सरल न था। वे बोलीं, तू लिखना कि मां रोती है। तुम जो भी कर रहे हो वो ठीक है पर एक बार आकर माता-पिता को देख जाना क्या ठीक नहीं है ? पर बहू जनता के कोप और पिताजी की गाली-गलौच के बारे में तू कुछ मत लिखना। कुछ समय तक चुप रहने के बाद प्रतिभा बोली, ''ठीक है मैं पत्र लिखूंगी।'' उसने पहले सोचा कि एक बार सासुजी की बातों में आकर उसका कितना अपमान हुआ था पर अब वह ऐसा नहीं होने देगी। उसके बाद उसने बहुत सोच-समझकर ऐसी एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठी लिखने के बाद उसके मन में एक प्रतिज्ञा करने की इच्छा जागृत हुई थी और डाक में डाल देने के लिए नौकर को चिट्ठी देते समय उसने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली थी—''बस यह मेरा आखिरी प्रयत्न है। जेल से छूटने के यदि पंद्रह दिन के अंदर वे नहीं लौटते तो मैं अकेले ही जीवन बिताऊंगी। मैं स्वतंत्र हो जाऊंगी और तब मेरा काम भी सिर्फ क्रांति होगा। जहां अत्याचार होगा मैं वहां पहुंचूंगी, जहां आंसू बह रहे होंगे मैं वहां जाकर सेवा करूंगी।''

जाह्नवी देवी को जब पता चला कि बहू ने बेटे के पास पत्र लिखा है तो वह बहुत खुश हुई। बहू की आंखों में छलछलाए आंसुओं को देखकर वह और भी खुश हो गई। पर उन्हें यह पता नहीं था कि ये आंसू दुख के नहीं बल्कि त्याग के मार्ग पर पहला कदम रखने की घोषणा कर रहे थे।

43

चिट्ठी डाल देने के दो दिन तीन दिन के बाद प्रतिभा अपने भविष्य में बारे में सोच रही थी कि तभी उनका नौकर रामा पहुंच गया, वहां अपनी छोटी मालकिन से कुछ बातें करने। एक गुप्त और बहुत जरूरी बात करने वह उसके पास बैठ गया था। उसने बताया कि गांव की जनता कल एक सभा करनेवाली है। जमींदार जी की गतिविधियों को देखकर जनता का धैर्य खत्म हो गया है। उसने तो एक को मारते-मारते मार ही दिया। और अब इस विद्रोह में अगुआ बने लोगों को वे जेल में ठूंसने की योजना बना रहे हैं। पुलिस के पास जाने से वे मारपीट कर भगा देते हैं। थानेवाले दरखास्त को फाड़कर फेंक देते हैं। बोलिए अब और क्या होगा ? फिर उसने कुछ रुक-रुककर कहा—"गांव की जनता केवल आपके भरोसा दिलाने पर रुकी है नहीं तो जमींदार जी को···।" "क्या मार डालते ? बोल ?" बीच में ही प्रतिभा पूछ बैठी थी। उसके बार-बार पूछने पर नौकर ने बताया, "नहीं, छोटी मालकिन पर गांव के लोग बहुत गरम हैं पर वे कह रहे हैं कि हम छोटी मालकिन को अपनी बात कह देने के बाद ही जो करना है सो करेंगे।"

प्रतिभा सब सुनकर कुछ देर के बाद बोली, "तुम उन लोगों को छोटे मालिक के आने तक इंतजार करने को कहो। और बीस के बाद तो वे आ ही जाएंगे। मैंने उन्हें पत्र लिखा है।" पर रामा को उसकी बात नहीं भायी। वह बोला, "छोटी मालकिन, लोग कह रहे हैं कि छोटे मालिक अब और वापस नहीं आएंगे। वे तो गांधीवादियों के दल में मिल गए हैं। यदि उनकी प्रतिक्षा करते रहेंगे तो यहां सब खत्म हो जाएगा।" तभी प्रतिभा के दिमाग में एक और युक्ति सूझी। वह बोली, "सभी

से कहो कि वे मिलकर छोटे मालिक के पास एक पत्र लिखें। उसमें उन्हें सीधे यहीं आ जाने के लिए लिखें। आज से ठीक पांच दिन बाद अगले शुक्रवार को उनके छूटने की तारीख है। ठीक उसी समय उनमें से कोई कटक चला जाए। जाओ अपने मुखियाओं को कह दो कि मैंने यही कहा है।"

शाम को रामा लोगों से बातचीत कर वापस आकर बोला, "छोटी मालकिन, उन्होंने आपकी बात मान ली है पर फिर भी वे कह रहे थे कि यदि वे वापस न आए तो ?" इस पर प्रतिभा ने उत्तेजित स्वर में कहा, "नहीं आएंगे तो मैं खुद तुम्हारी समस्या से जूझूंगी। इस शुक्रवार के ठीक पंद्रह दिन बाद जो शुक्रवार आएगा। उसी के अगले शनिवार को तुम सभा करना। मैं उस सभा में आऊंगी। वो नहीं आएंगे तो मैं खुद तुम्हारी समस्या का समाधान करूंगी।"

वास्तव में गांव की जनता इस ढंग से एक दबाव डालना चाह रही थी रामहरिबाबू के ऊपर। क्योंकि जब वे घर में ही अपनी पत्नी और बहू के मुंह से सब बातें सुनेंगे तो वे अवश्य डर जाएंगे। पर जनता क्या जाने कि प्रतिभा के विचार किन रास्तों पर चल पड़े थे ?

44

प्रतिभा ने रामा को बड़े जोश में सब कह तो दिया था पर अब उसे डर लग रहा था। यदि सचमुच सौ-सौ लोग सामूहिक रूप से रामहरिबाबू पर आक्रमण करने आएंगे और इधर नवीन भी न पहुंचे होंगे तो क्या वह उस समूह की नेत्री बन अपने ससुर को मारने आएगी ? हां वह उनको जाकर शांत रहने के लिए

कहेगी पर इससे क्या समस्या सुलझ जाएगी ? उनके दुख-दर्द कैसे दूर होंगे ? और पहली बात कि अपने सास-ससुर और समाज से संबंध तोड़ क्या वह इस विद्रोही जनता से सीधा संपर्क रख पाएगी ? पर अंत में वह अपनी सास को बिना बताए न रह पाई थी कि विद्रोही जनता उसके ससुर की जान लेने पर उतारू है। "तुझे कैसे पता चला ?" सास द्वारा पूछने पर प्रतिभा को मजबूरन बताना पड़ा कि रामा ने ही उसे यह सब बताया है। अब जाह्नवी देवी के रामा से पूछने पर उसने बताया—"मालकिन, मैंने तो एक उड़ती-उड़ती खबर सुनी थी, पर सचमुच थोड़े लोग ऐसा करेंगे ?" पर फिर भी जाह्नवी देवी के मन में चिंता बैठ गई थी। सो प्रतिभा के मना करने पर भी उन्होंने यह बात अपने पति को बता दी। क्योंकि पहले से ही वे जान लेंगे तो अपने बचाव का कुछ न कुछ रास्ता तो निकाल लेंगे।

प्रतिभा के मन में जो आशंका थी कि रामा विद्रोहियों का दूत बनकर उसके साथ मिलकर ही यह चक्कर चला रहा है और यह समझकर ससुरजी आगबबूला हो जाएंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। वे केवल उत्तेजित होकर बोले, "मैं सारी बातें जानता हूं। उनकी कमेटी में जो भी विचार-विमर्श होता है उन्हीं का आदमी मुझे आकर बता जाता है। मैं अपने बचाव का पूरा बंदोबस्त कर चुका हूं ये कव्वे मेरे पीछे लगे हैं। जब तक ढेर सारे एक साथ न मरेंगे तब तक उनकी छाती ठंडी नहीं होगी।" फिर कुछ देर बाद वे स्वयं से ही कहने लगे थे, "मैंने पुलिस और जाजपुर के उच्च पदाधिकारियों को खबर कर दी है। जब दल के दल बंदूकधारी आएंगे तब उनका मजा निकलेगा।"

45

रामहरिबाबू की बंदूकधारियों की बात सुनकर प्रतिभा परेशानी में पड़ गई थी। वे लोग यदि सभा करेंगे तो वहां पर हजार-हजार लोग बैठे होंगे। उन पर गोलियां चलाई जाएंगी तो अनगिनत तो वहीं मर जाएंगे। अनेक जख्मी हो जाएंगे। ओफ्फ् कितना भयंकर दृश्य होगा। पर यह सब होगा ही क्यों ? गरीब लोगों के अत्याचार के विरूद्ध सिर उठाने पर उनके सिरों को कुचलने के लिए ही यह कराया जाएगा ? क्या धन एक ऐसी चीज है जिससे इस दुनिया में कुछ भी कराया जा सकता है ? पुलिस और उच्च पदाधिकारी क्या सब इसी धन के वश में हो जाते हैं ? पर यह धन आता कहां से है ? उन्हीं गरीब लोगों से चूसकर ही तो यह धन कुछ हाथों में इकट्ठा रहता है। ये सारी भावनाएं उसके मन में आते ही उसका मन अपने पति के प्रति श्रद्धा से भर गया। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। पर साथ ही वह सोच रही थी कि उन्हें इस परिस्थिति में गांव आकर यहां की जनता की मदद अवश्य करनी चाहिए। फिर उसने रामा को बुलाकर उसे चिंता न करने को कहा। साथ ही उसने कहा कि अन्य सभी लोगों को भी डरने की कोई जरूरत नहीं है। सभी नवीन के आने तक इंतजार करें। पर रामा के मुख पर निरूत्साह को देख वह समझ रही थी कि उसका मनोबल टूट गया है। अब वह स्वयं को भी दोषी समझ रही थी। रामा ने उसे जो भी बताया था वह बात उसे अपनी सास को नहीं बतानी चाहिए थी। साथ ही लोग भी उस पर संदेह करेंगे कि वह अंदर की बात बताकर उन्हें विपत्ति में डाल रही है।

उसने सोचा कि यदि नवीन आ जाते हैं तो वह खुलकर

जनता के पक्ष में बोलेगी। उसने उन्हें वचन दिया है। हां, वह जरूर जाएगी उनकी सभा में। वह मजबूत होकर अपने सास-ससुर, पास-पड़ोसी किसी की भी परवाह न कर वह सब कहेगी जो भी उसे कहना है। पर क्या कहेगी ? कैसे कहेगी ? सोचते-सोचते वह पसीने-पसीने हुई जा रही थी। फिर भी वह अपने को हिम्मत बंधा रही थी। वह सोच रही थी, जैसे स्वामी परित्यक्ता सीता ने इस विदीर्ण धरती के अंदर शरण ले ली थी वैसे ही वह भी अपने आप को इस उन्मुक्त जगत में मिला देगी।

46

एक के बाद एक दिन बड़ी मुश्किल से गुजर रहा था। और अंत में पंद्रह दिन बीतने लगे। बस आ रहे होंगे, अभी बीच रास्ते में होंगे सोच-सोचकर नवीन का इंतजार हो रहा था पर उनका कहीं अता-पता न था। इस बीच प्रतिभा को खबर मिली थी कि लोग कटक भी गए थे नवीन को लेने पर उसका कुछ पता नहीं। जिस दिन पंद्रह दिन पूरे हो गए, प्रतिभा ने रामा को बुलाकर कहा, "जाओ लोगों से कहो कि कल वे सभा का आयोजन करें। मैं वहां पहुंचूंगी।" पहले तो रामा को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ पर जब बार-बार उसने जोर देकर अपनी बात कहीं तो रामा ने एक टांग पर दौड़कर सारे गांव में खबर दे दी।

प्रतिभा के मन में कितना चोट खाया अहंकार और अत्याचारित जनता के प्रति कितनी सहानुभूति जमा है यह कोई भी नहीं नाप सकता था। वह सोच रही थी—"उनका इतना अहंकार ! उस रात मैं खुद उन्हें बुलाने गई थी पर उन्होंने मुझे

भिखारिन की तरह दुत्कार दिया था। और फिर मैंने चिट्ठी लिखी उसका भी कोई उत्तर नहीं। ठीक है। पूरा गांव उनका कुछ नहीं है, गांव की जनता उनकी कुछ नहीं है, माता-पिता उनके कुछ नहीं है। और मैं तो उनकी कुछ भी नहीं हूं। परायी लड़की हूं ना। पर यहां मैं अपने सास-ससुर के लिए नहीं आई थी। मेरी भी कोई इज्जत है। मैंने लोगों को वचन दिया है कि पंद्रह दिन खत्म होते ही सभा का आयोजन करो। मैं उसमें जाऊंगी। हां जाऊंगी, जाऊंगी, अवश्य जाऊंगी।''

तभी बाहर रामहरिबाबू की आवाज आई। प्रतिभा ने सोचा कि नवीन शायद आ गए। पर अगले क्षण वह जान गई थी कि उसकी उत्कंठा निर्मूल है। कुछ समय के बाद जाह्नवी देवी ने उसे धीरे से कहा, ''बहू तूने सुना ना ? ये लोग नगाड़े बजा-बजाकर चारों ओर प्रचार कर रहे हैं कि कल हाट लगने की जगह एक सभा होगी और उस सभा को तू संबोधित करेगी। जानती है तेरे पिताजी सुनकर कितना गुस्सा हो रहे हैं कि ये लोग उनकी बहू का नाम बदनाम कर रहे हैं। वे तो आपे से बाहर हो गए हैं। पुलिस के पास भी उन्होंने लोग भेज दिए हैं।'' प्रतिभा सब सुनकर भी चुप थी।

उस रात वह पलंग पर न सोकर जमीन पर चटाई बिछाकर सोई थी। मन ही मन उसने पलंग से विदाई ले ली थी। उसने सारे गहने उतारकर बक्से में रख दिए थे। उसके हाथों में बस दो चूड़ी बाकी थी। वह आगामी अनजाने भविष्य की तैयारी कर रही थी।

भोर की ठंडी हवा के स्पर्श से लगी नींद में उसने एक सपना देखा। उसने देखा कि नवीन उसका हाथ पकड़कर बहुत अनुनय-विनय कर रहे हैं, क्षमा मांग रहे हैं। उसने झटककर अपना हाथ छुड़ा लिया। वह बोली थी कि किसी ने भी कोई

गलती नहीं की है फिर मुझसे माफी मांगने की क्या जरूरत है ? फिर वह किसी शून्य में मिल जाती है। नवीन बड़ी कातर दृष्टि से उसी की ओर देखे जा रहे हैं। उसका भी मन नवीन के पास लौट जाने को हो रहा है पर बीच में शून्य है, महाशून्य। कोई किसी से नहीं मिल पा रहा है।

47

सुबह हुई। रामहरिबाबू आनेवाले उच्च पदाधिकारी, पुलिस अफसर और सिपाहियों के लिए रहने और खाने का बंदोबस्त करवा रहे हैं। इधर उन्होंने लोगों को यह पता करने के लिए भी भेज रखा है कि सभा में कौन-कौन और कब आ रहे हैं। उनके मन में डर तो है पर फिर भी वे यहां से वहां और वहां से यहां अपने काम से घूमते फिर रहे हैं। जाह्नवी देवी सुबह-सुबह नहा-धोकर भगवान के सामने प्रार्थना कर रही है कि किसी का भी अनिष्ट न हो।

प्रतिभा सुबह-सुबह नित्यकर्म समाप्त कर अपने हर काम से विदाई ले रही है। उसके शरीर पर केवल हाथों में सोने की दो चूड़ी देखकर जाह्नवी देवी ने पूछा, "क्यों बहू, पहले ही तो तूने सारे गहने उतार दिए थे। शरीर पर था ही क्या जो बाकी के भी उतार दिए ?" प्रतिभा ने गंभीर होकर कुछ समय चुप रहने के बाद कहा, "माँजी, गहनों का बक्सा आपके कमरे में ही है।" जाह्नवी देवी उसकी बात का अर्थ समझ न सकीं ? उन्होंने सोचा कि बहू शायद डर रही है कि लोग घर में घुसकर सोना-गहना ले जाएंगे, सो वे उसे हंस-हंस कर सांत्वना दिए जा रही थीं कि ऐसा कुछ नहीं होनेवाला। फिर उन्होंने गौर किया कि आज बहू ने उनके लिए बहुत सारे पान बना दिए हैं पर

खुद एक भी नहीं खाया। आज उसने भोजन में भी अनेक पकवान बनाए हैं पर खुद तो कुछ भी नहीं खाया। उनके पूछने पर प्रतिभा ने कहा था, "मेरा पेट ठीक नहीं है।"

दोपहर में भोजन कर जब सासूजी थोड़ा विश्राम करने लगी तो वह उनके पैर दबाने लगती है। "तूने तो आज कुछ खाया भी नहीं बहू ! अच्छा जा, सो जा।"कहने पर भी प्रतिभा ने उनकी बात नहीं मानी। और जब उन्हें हल्की-हल्की झपकी आने लगी तो उनके पैरों पर अपना माथा लगाकर उसने उन्हें प्रणाम किया। मन ही मन में वह बोली, "मां मुझे विदा करो।" कहते-कहते उसकी आंखें भर आई थीं।

वहां से आकर वह भविष्य के लिए खुद को तैयार करने लगी थी। एक सुनसान मैदान में चांदनी रात में कोई अकेला खड़ा हो उसे बिलकुल वैसा ही लग रहा था। पर अब कुछ भी सोचने का समय नहीं था। तुरंत ही घर से उसे निकल जाना था। वह रामा को साथ ले जाएगी। वहां से सीधी सभा में जाएगी और जो भी मन में आएगा वहां कहेगी। फिर प्रकाश जहां होगा वहां जाएगी और वहीं अपना पूरा जीवन समर्पित कर देगी।

प्रकाश की बात सोचते ही उसे नवीन की याद आ गई। वह सोचने लगी कि प्रकाश के साथ रहने पर नवीन से भी जरूर मुलाकात होगी और फिर...पर उसने चिढ़कर उस भावना को अपने मन से निकाल दिया। "नहीं, मेरा अब उनके साथ पति-पत्नी का रिश्ता नहीं है। एक परिचित आदमी की ही तरह पहचान रहेगी। शायद वह भी नहीं होगा। वो मेरे कौन हैं और मैं भी उनकी कौन होती हूं ?"

49

हाट लगनेवाले मैदान में शाम को सभा होगी, सुनकर चारों ओर से लोग-बाग वहां के लिए चल पड़े हैं। ऐसा लग रहा था जैसे सभा में सम्मिलित होने से सारा अत्याचार समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा चारों ओर यह खबर जंगल की आग-सी फैल गई थी कि प्रतिभा देवी इस सभा को संबोधित करेंगी। नवीन भी देश के लिए जेल गए हैं और अब उनकी पत्नी भी अपने पति के पदचिह्नों पर माता सीता सी चल पड़ी हैं। इस दृश्य को देखने को सौभाग्य मानकर अनेक लोग उधर खिंचे चले आ रहे थे।

शाम होने से पहले वहां लगभग दो-तीन हजार लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। उच्चपदाधिकारी तथा अनेक बंदूकवाले पुलिस के लोग भी वहां जमा हो गए थे, सभा पर नजर रखने को। पुलिस को देखकर अनेक लोग भयभीत हो गए थे पर चूंकि सभी एक साथ थे इसलिए भय के चिह्न कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। बल्कि लोगों के मनों में अत्यधिक जोश उमड़ता जा रहा था। उच्चपदाधिकारी कुर्सी पर बैठे थे। उनके सामने एक मेज थी। मेज के दोनों ओर पुलिस इंस्पेक्टर और सब-इंस्पेक्टर थे। मेज पर दो कापियां और पेंसिल रखी थी। उच्चपदाधिकारी महोदय बड़े निरूत्साह से चारों ओर देख रहे थे। उनके मुंह पर विषाद की छाया थी।

धीरे-धीरे कोलाहल शांत हो गया था। प्रकाश और पुरंदर सभा के बीच चारों ओर घूम-घूमकर लोगों को ससम्मान बिठा रहे थे कि तभी प्रकाश की नजरें उस उच्चपदाधिकारी पर पड़ीं और वे बड़े बेपरवाह से उससे बोले, "क्यों महेंद्रबाबू ! ओहो तो आप यहां आए हैं गोली मारने का आदेश देने ? चलो अच्छा

है। कई लोग रंगमंच पर आपका अंतिम अभिनय भी देखने का सौभाग्य पा जाएंगे।"

एक समय के अपने इस ससम्माननीय मित्र को अवश्य ही कुर्सी पर बिठाना चाहिए, यह विचार महेंद्रबाबू के मन में आया था, पर उन्होंने वह अपने मस्तिष्क से झटक दिया। एक उच्चपदाधिकारी होकर उन्हें दबना नहीं चाहिए सो यह सोचकर कुछ गरम होकर उन्होंने प्रकाशबाबू को उत्तर दिया, "आप लोग यदि हिंसा या अशांति फैलाएंगे तो हमें गोली चलानी पड़ेगी, इसमें आश्चर्य की बात क्या है ?" "हमें यदि गोली का डर होता तो हम अवश्य सोचते कि गोली खाने में ही हमारी मुक्ति है ?" कहकर प्रकाश ठठाकर हंस पड़े थे। महेंद्रबाबू ने चिढ़कर बातों का रुख मोड़ दिया था और अंत में बेचैन होकर पूछ बैठे कि, "प्रतिभा देवी सभा में कितने बजे आएंगी ?" उन्हें उनका उत्तर नहीं मिला पर महेंद्रबाबू का चेहरा गंभीर हो गया था।

ठीक समय पर सभा आरंभ हो गई थी। पुरंदर ने खड़े होकर देश की परिस्थिति के संबंध में भाषण देना शुरू कर दिया था।

49

संध्या गहराने लगी थी। सभा के बीच में एक बड़ा बल्ब और चारों कोनों पर चार बड़े-बड़े बल्बों की व्यवस्था थी। पुरंदर देश-विदेश के सभी क्रांतियों के बारे में कुछ न कुछ बोलते चले जा रहे थे।

तभी सभा के पीछे थोड़ा-थोड़ा कोलाहल सुनाई पड़ा। धीरे-धीरे सभा की नजरें पीछे की ओर मुड़ गई थीं। 'छोटी मालकिन आ रही हैं', 'प्रतिभा देवी आ रही हैं' का एक दबा स्वर चारों ओर फैलता जा रहा था और देखते ही देखते

'हरिबोल', 'महात्मा गांधी की जय' के नारों से सभा-स्थल गूंज उठा। खुद उच्चपदाधिकारी भी उस ओर देखने लगे थे—ये क्या वही बालिका है, जिसे एक दिन उन्होंने हृदय में स्थान दिया था ? प्रकाश प्रतिभा को भीड़ से निकालकर सभा के बीच तक ले आए थे।

प्रतिभा के चेहरे पर संकोच के कोई चिह्न नहीं थे बल्कि उसकी आंखों से लगातार एक ज्योति निकल रही थी। प्रकाश ने धीरे से उससे कहा, "तुम्हें जो भी कहना है कह दो। लोग बहुत देर से आ चुके हैं और बहुत कुछ सुन भी चुके हैं।" पुरंदर के भाषण समाप्त होने के कुछ क्षणों के बाद प्रतिभा ने कुछ ऊंचे स्वर में आरंभ किया, "भाइयो, मैं आज पहली बार पिंजरे से निकली हूं। अच्छी तरह से अभी उड़ना नहीं आता, इसलिए आप लोग मुझसे ज्यादा आशा न करना। पर मैं आप लोगों को इतना बता देना चाहती हूं कि मैं आपके दुख में शामिल होने के लिए बाहर आई हूं। यदि आपका भला होगा तो मेरा भला भी होगा और अगर आपका बुरा होगा तो मेरा भी बुरा होगा। भोर होते ही जैसे पंछी चहचहाकर प्रातःकाल की घोषणा कर देते हैं ठीक वैसे ही आज की यह सभा सारे अत्याचार का अंत और शांति के आलोक के विस्तार की चहचहाहट बने। मैं भी अपनी सीमित शक्ति आपके साथ मिला दूंगी। मुझे और ज्यादा कुछ नहीं कहना है।" इतना कहकर वह शिथिल होकर बैठ गई थी। उसे लग रहा था न जाने किस मंत्र-बल से वह उतना कह गई थी पर अब वह शक्ति जैसे शरीर से चली गई थी।

जयजयकार के बीच 'रास्ता छोड़ो', 'हटो, हटो' की आवाजें आने लगी थीं। तभी सबने देखा कि नवीन उसी ओर बढ़े चले आ रहे हैं। उनकी नजरें प्रतिभा पर पड़ीं और प्रतिभा ने भी उनको देखा। कुछ समय वे लगातार एक दूसरे को देखते रहे।

कुछ दूरी पर खड़े होकर महेंद्रबाबू भी उन्हें दुखी होकर देखे जा रहे थे।

प्रतिभा को स्पष्ट करने के लिए वे तुरंत आवेग भरे कंठ से प्रकाश को कहने लगे कि वे किन कारणों से यहां वक्त पर नहीं आ पाए। रास्ते में एक स्थान पर भीषण अत्याचार हो रहा था सो वे वहीं····।

पर प्रकाश ने उनकी ज्यादा बात नहीं सुनी, वे खड़े होकर कहने लगे थे।

"मेरा परिश्रम सार्थक हो गया। क्रांति का गठबंधन होकर तुम दोनों सदा जीवित रहो। तुम्हारा दुख ही चिरसुख हो, निर्धनता ही संपदा बन जाए और विच्छेद ही मधुर-मिलन बन जाए, यही मेरा आशीर्वाद है तुम जैसे आदर्शवादी क्रांतिकारियों को।"

●●

विनायक कम्प्यूटर्स, दिल्ली-32 द्वारा लेज़र टाइपसेट और
शिवम् ऑफसेट, नारायणा, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।